

Eminent Judge Dedicated to Social Service

- Justice A.K. Mathur



It gives me a great pleasure to record my views about Justice Nagendra Jain. I know Justice Jain right from the day when he started practice in Rajasthan High Court at Jodhpur. He is the son of the worthy father Late Justice J. P. Jain who adored the bench of Rajasthan High Court for a good number of years. Justice N. K. Jain was born on 20th October, 1942 and started his practice at Rajasthan High Court in 1968. He was an outstanding player of Badminton.

Justice N. K. Jain was very courteous right from the day he joined the Bar and I never saw him losing his balance as the Member of the Bar. I have seen him arguing the cases as a professional lawyer with thorough preparation.

He was a Member of Bar Council for a very long time and had a very long inning as a Member of the Bar Council and held various positions in Bar Council from time to time. Before his elevation, he appeared before me as an advocate & argued a number of cases with very much professional ability.

He was elevated as Judge of Rajasthan High Court in the year 1990 and delivered several judgments with great erudite. He was very calm and very courteous even as a Judge of Rajasthan High Court. His behaviour as a Judge was very friendly with the Members of the Bar. Because of his good qualities, he was elevated as the Chief Justice Madras High Court and then to Karnataka High Court and there also he earned a huge fame & name for himself. He was thereafter appointed as the Chairperson of the Human Rights Commission at Himachal Pradesh and thereafter the Chairperson of Rajasthan State Human Right Commission. He proved his mettle.

He by his hard work & concern for human rights, brought this institution a great name in Rajasthan. He has to his credit a number of publications that shows his in-depth knowledge of Law. He totally dedicated himself after retirement as Chief Justice and Chairperson of

Rajasthan State Human Right Commission to social service and he remained the President of Digamber Jain Atishaya Kshetra, Shri Mahaveer Ji . Even today he is dedicated to social service and presently he is the President of Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan, Moti Doongri Road, Jaipur.

Mr. Jain is an eminent jurist and a big social worker who is still associated with the social & religious institutions. The young members of Bar should emulate his example and conduct themselves as a courteous and well-behaved advocate if they want to achieve success in legal profession. Justice Jain is an example of such virtues and unfailing courtesy which endeared him to Bar as well as society. I wish him long and happy life.

- Justice A.K. Mathur

Former Judge, Supreme Court of India Former
Chairperson, Armed Forces Tribunal Former
Chairman, Seventh Central Pay Commission



Justice A.K. Mathur with Other Judges at Jodhpur Residence (Nov. 1990)

धुन के पक्के, स्वाभिमानी

-कैलाश चन्द शाह



माननीय एन. के. जैन साहब मेरे स्कूल के समय के साथी रहे हैं और उनसे 65 वर्ष पुराना रिश्ता है। मेरे पिताजी गैदीलाल जी शाह वकील उनके पिताजी जे.पी. जैन साहब को अलवर से वर्ष 1950 में आने पर जानने लगे और उनको मंदिरों, वक्फ प्रॉपर्टी एवं मुसलमानों के बड़े मुकदमे देने लगे। दोनों ही महानुभाव दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी के बहैसियत सदस्य फरवरी, 1958 से साथ रहे। एन. के. साहब ने वर्ष 1985 में बतौर अध्यक्ष, बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की सोविनियर में हमारे पिताजी के वकालात के 50 वर्ष से अधिक पूर्ण होने पर

अन्य वकीलों के साथ उनका भी फोटो व परिचय छपवाया और केन्द्रीय मंत्री भारद्वाज जी से उनको सम्मानित कराया। इस वजह से भी हमारे पारिवारिक सम्बन्ध घनिष्ठ बने, जो आज तक बदस्तूर चले आ रहे हैं। बाद में आप अपने पिताजी की तरह जज रहे व मद्रास, कर्नाटक जैसी बड़ी अदालतों में और भी ज्यादा जिम्मेदारी के साथ अपना काम निर्भीकता व ईमानदारी से किया।

मैंने पाया कि एन.के.साहब अपनी धुन के पक्के, दूसरों की मदद करने में आनन्द का अनुभव करने वाले, मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था रखने वाले, स्वाभिमानी, सहज स्वभाव व वर्तमान में जीने वाले व्यक्ति हैं। आप में खेल भावना कूट-कूट कर भरी है। कठिन परिस्थितियों में भी एन.के. साहब को कभी विचलित होते हुए नहीं देखा। उनमें अपने साथी को परखने व उनसे काम लेने व फिर उनके काम की तारीफ करने का विशेष गुण है, जो उनके प्रोफेशन में आने के पहले व बाद भी देखने को मिलता है। सभी से अच्छी बातें निरन्तर सीखना, आपस में सामंजस्य बनाये रखना व अपने लक्ष्य को हासिल करके, उसे भूल कर नये काम करने का भी विशेष गुण है, जो आपके उत्तम चरित्र को दर्शाता है।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि आप न केवल खेल में अग्रसर रहे, अपितु खेल को अपने जीवन में हॉबी बनाये रखा। इसी तरह वकालात के साथ वकीलों की संस्था का बतौर महासचिव/चेयरमैन बार कौंसिल, साथियों के लिए खूब काम किये। परन्तु पोस्ट से चिपके नहीं, दूसरों को मौका दिया। राजस्थान यूनिवर्सिटी में विधि विभाग के विभागाध्यक्ष व डीन श्री बी.एल.वर्मा साहब के माध्यम से 3-4 विधि विद्यार्थी मेहता, सुरेश, रामावतार आदि और नये वकील जिसमें राकेश बी. कुमार, श्याम आर्य, त्रिपुरारी, बृजमोहन, जिन्दल, जिनेश, पुजारी, सुधीर व मुझे बार कौंसिल राजस्थान व इण्डिया के विभिन्न कार्यक्रमों में बाहर से आने वाले प्रबुद्ध वकीलों, टीचिंग फ़ैकल्टी व डेलिगेट्स की देखरेख में उनके आवास स्थान खासा कोठी एवं ओटीएस में सभी आवश्यक सुविधाएं सुलभ कराने की जिम्मेदारी सौंपी और कार्यक्रमों के माध्यम से हमने काम करने का व दुनियादारी का तजुर्बा हासिल किया जो आज भी यादगार है।

सन् 1981 में आयोजित लॉयर्स सेमिनार के अवसर पर बार एसोसिएशन का सोविनियर हमारी जैना प्रेस में छप रहा था। प्रूफ रीडिंग के लिए 2-3 आर्टिकल कई तकाजों के बाद भी प्राप्त नहीं हुए।

उन्होंने कहा कि इसका कोई न कोई कारण जरूर है, आप दूसरा प्रूफ लेकर उसको फाइनल करो, जिससे समय पर सोविनियर छप सके। उनका ऐसा कार्य बोल्ट निर्णय लेने की क्षमता दर्शाता है।

आपके पिताजी की मृत्यु वर्ष 1975 में होने पर आपने 13 वें दिन ही जोधपुर का सरकारी मकान खाली कर दिया। इसके अलावा आपने स्वयं “जे.पी.जैन मेमोरियल ट्रस्ट” जयपुर की जमीन की जगह पल्लीवाल समाज को देने की पहल माननीय मंत्री जी से की। बेंगलोर में जजों को दिये जाने वाले प्लॉट छोड़कर अच्छे संस्कारों का परिचय दिया। आपने त्याग, संतोषी, सब्र व समभाव में रहने जैसे अच्छे संस्कार अपने माता-पिता से अर्जित किये।

राजस्थान में नम्बर दो के न्यायाधीश होने के बावजूद मद्रास में छः नम्बर की स्थिति में जाने पर भी फौरन पद ग्रहण कर लिया। उनका कहना था जो हो रहा है अच्छे के लिए हो रहा है और यह सोच उनकी अच्छी प्रवृत्ति का द्योतक है एवं अच्छे गुणों को दिग्दर्शित करता है।

हमने उन्हें राजस्थान जैन सभा, लॉयन्स व रोटरी क्लब, जैन सोशियल ग्रुप व अन्य कई संस्थाओं में आमंत्रित किया। उन्होंने हर जगह अपनी गरिमामयी सादगी व सहज भाव बनाये रखा। उन्होंने अपने संवाद के जरिये सभी को इन्सपायर व मोटिवेट किया।

मानवाधिकार आयोग के बतौर अध्यक्ष उन्होंने बहुत सारी कानूनी पुस्तिकाएं लिखीं। उन पुस्तिकाओं को कई एनजीओ व संस्थाओं द्वारा हमारी जैना प्रेस में रिप्रिन्ट करवाकर कई स्कूल, कॉलेज, एनजीओ व आमजन में वितरित करवाया। कुछ धार्मिक व कानूनी पुस्तिकाएं एन.के. साहब ने अपने पिता न्यायमूर्ति जे.पी.जैन साहब की स्मृति में भी लिखीं, जो उनके सुपौत्र गौरव जैन द्वारा प्रकाशित करवाकर वितरित करने का बहुत ही सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य किया गया।

एन.के. साहब ने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक व जनहित में कार्य कर अनेक लोगों को मोटिवेट किया। जागरूकता के लिए संविधान की धारा 51 ए में वर्णित कर्तव्यों की महत्ता को आमजन को बताया। एन.के. साहब भला सोचने व करने के लिए दिलों में प्रेम होना जरूरी समझते हैं व स्वयं का निरीक्षण करने की भी आदत रही है। जैन साहब में आत्मविश्वास, दूसरों के प्रति आदर व सबके प्रति समानता का भाव देखने में आया।

एन.के.साहब एक व्यावहारिक, संतोषी व कम बोलने वाले व्यक्ति हैं। उन्हें अपने काम के प्रचार-प्रसार का शौक नहीं है और इसी कारण उनके सद्गुणों को शायद ही सभी जानते हों। समाचार विचार संस्थान ने जस्टिस एन.के. जैन साहब के व्यक्तित्व व कृतित्व को प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है वो साधुवाद के पात्र हैं। मुझे भी उनके बारे में बात रखने का मौका दिया। इसके लिए मैं समाचार विचार संस्थान व उनके सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे पूर्ण आशा है कि समाचार विचार संस्थान व उनके साथियों द्वारा प्रकाशित यह पुस्तिका लोगों को अच्छे संस्कार देगी व प्रेरणादायक साबित होगी।

जय महावीर !

कैलाश चन्द शाह

पूर्व उपाध्यक्ष, राजस्थान जैन सभा, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष, लायन्स क्लब (मैन), जयपुर

Bold and Fair Chief Justice

- Justice Huluvadi G. Ramesh



I am happy to note that Samachar Vichar Sansthan and its associate are publishing a book on the personality and accomplishment of Justice Shri Nagendra Kumar Jain. Justice N.K. Jain belongs to a humble and renowned family. He is an acumen in legal field, practiced as an Advocate before the high Court of Rajasthan in all branches of law. He had been elevated as Judge of Rajasthan High Court at an early age in July 1990.

He was transferred to Madras High Court in November 1997. He remained four years in Madras and for two years as Chief Justice. He was transferred to Karnataka High Court in August 2001. I was appointed Judge along with other brother judges in his period.

He has a very sharp memory and good understanding. He was bold and fair to one and all. He has a capacity to deal in odd situation with boldness and fairness and decide the issues firmly on merits only.

He dealt with the matters judiciously and promptly and was known for a speedy disposal of the cases. His humbleness and equal treatment to all the brother Judges and the Bar was at large. As a Judge, he maintained quality in his orders and judgments. He did not have any reservation towards anybody and believed in simplicity. Apart from humbleness and gentleness, he was a down to earth person and a good human being.

During his period he actively motivated young players to play Badminton. In Karnataka through Registrar and President of Judges association, he organized sports meet for 3 years wherein ministerial staff and their family members participated in different events. He donated a Trophy to the best players.

He was also the Chairman of Himachal Pradesh Human Rights Commission and Rajasthan State Human Rights Commission. In early years he actively played Badminton for a number of years. Even at this age of 76, he is very active. He is actively discharging his work in sportsman spirit with NGO's in other various fields like health, education, religious etc.

He maintains good health and is very energetic having vigorous feeling of sportsmanship. He was very kind towards his personal staff and peons working under him. May the Almighty shower his blessings on him and give him good health & happiness. With regards and best wishes.

Justice Huluvadi G. Ramesh

Administrative Judge High Court of Madhya Pradesh Jabalpur

A Judge with Sharp and Good Understanding

- Justice G. C. Mittal



Justice Nagendra Kumar Jain is known to me as a Judge when I came from Delhi as Chief Justice Rajasthan in 1994. I had formed Division Bench with Judges at Jodhpur as well as in Jaipur. On coming to Jodhpur I used to sit with Justice N. K. for some time.

I found him simple, sharp with good understanding and grasping. He always assisted me in disposing the matter quickly. I found that he is quite capable to dictate orders in the court. He used to talk little to the point and explain in short. He was quite cordial with brother Judges and had good behaviour with learned lawyers in the court.

I made him in-charge in two committees one for selecting drivers and the other for stenographers. I was satisfied that he had taken meritorious persons only for a short period. I also made him incharge to conduct in disciplinary inquiry against the district Judge. Whatever work had been assigned to him he discharged his duties with satisfaction and in time.

On Considering, I found Justice N.K. was fair and reasonable in discharging his duties with strong conviction and boldness.

Justice N.K. was sitting in Jodhpur from the day he took oath in July 1990 and during the period he never worked as sitting Judge in Jaipur Bench. So I wanted to transfer him to sit at Jaipur bench, then brother Justice R.P. Saxena requested me that his wife was not well so he might be considered for transfer. I told him that I had already promised and intimated Justice N.K. He may ask him if he agrees I will transfer him. At that time Justice N.K. decided to forgo his chance. I was happy and appreciated the gesture of Justice Jain for his kindness.

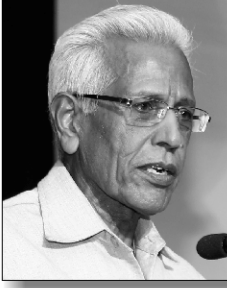
I have always cherished the sweet memories of my stay as Chief Justice Rajasthan High Court and in particular good time spent with N. K. and his wife Aruna. I Pray to Lord Mahaveer to bless him.

Justice G. C. Mittal

Former Chief Justice of Rajasthan High Court

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी

-डॉ. प्रेमचन्द रावका



न्यायमूर्ति श्री एन.के.जैन साहब से मेरा गत 15 वर्षों से स्नेहपूर्ण सान्निध्य सम्बन्ध रहा है। ये योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी हैं। न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन ने अपनी उच्च योग्यता, क्षमता, कर्म-निष्ठता, प्रभावशीलता, मिलनसारिता, व्यवहार कुशलता से विविध क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः - उद्यम से ही कार्य सिद्ध होते हैं: मनोरथों से नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे निष्ठा पूर्वक सम्पन्न किया। ये आपके यशस्वी जीवन की विशेषता है। हितोपदेश की यह सूक्ति

आपके व्यक्तित्व व कृतित्व पर सार्थक होती है - सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्। परिवर्तिन संसारे मृतः को वान जायते। चौरासी लाख यौनियों में भटकते हुये, दुर्लभता से प्राप्त मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि उसके जन्म से उसके स्वयं के साथ उसके समाज की समुन्नति हो, नहीं तो इस परिवर्तन शील संसार में कौन जन्म-मरण नहीं करता।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी की त्रि-वार्षिकी प्रगति विवरणिका वर्ष 2011-13 में प्रकाशित मंगल आशीर्वाद में प्रातः वन्दनीय आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के शब्दों में - “आर्ष मार्ग एवं जिनवाणी के प्रबल समर्थक, तीर्थों के प्रति पूर्ण समर्पित, कुशाग्र बुद्धि, न्याय, विद्या, विनय एवं विवेक के जीवन्त व्यक्तित्व न्यायमूर्ति श्री एन.के.जैन के कार्यकाल में अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के बहुमुखी विकास के साथ-साथ जयपुर में अपभ्रंश साहित्य अकादमी (जैन विद्या संस्थान) को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से भवन-निर्माण के लिए भूमि का क्रय कर एक स्वर्णिम इतिहास रचा गया है ” जो आज विशाल भवन के रूप में प्रस्तुत है। राज्य सरकार से यह भूमि उपलब्ध कराने में आपका बड़ा प्रयासरहा है।

न्यायमूर्ति श्री एन.के.जैन एक विद्वान एवं सफल लेखक भी हैं। राजस्थान जैन सभा द्वारा प्रकाशित महावीर जयन्ती स्मारिका के मेरे सप्त वर्षीय प्रधान सम्पादकत्व काल में आपके भारतीय संस्कृति में अहिंसा व मानवाधिकार, विशेषतः जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में विद्वतापूर्ण सप्रमाण आलेख प्रकाशित हुये हैं, जो सर्वदा पठनीय, मननीय और तथ्यपूर्ण सामग्री प्रदान करते हैं। इसी प्रकार समाधिमरण/संथारा/संल्लेखना, अणुव्रत एवं मानवाधिकार, मानवाधिकार और जैन धर्म आदि पुस्तकें - आपके राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्षता काल में प्रकाशित महत्वपूर्ण साहित्य हैं। जिन पर आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त है।

गीता के “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन” के सिद्धान्त को अपने जीवन का सिद्धान्त बनाने वाले श्री एन.के. जैन प्रारम्भ से ही विविध क्षेत्रों में कर्मशील रहे हैं। निष्काम भावना से अपने पद पर आरुढ़ रहते हैं। दक्षिण भारत और राजस्थान आदि अपने कर्मस्थलों पर विविध क्षेत्रों में आपकी दानशील परोपकारिणी प्रवृत्ति आपके मानवीय गुणों का उद्घाटन करती हैं।

ऐसे मानवीय गुणों से ओत-प्रोत शिक्षा, साहित्य एवं धर्म-संस्कृति के प्रति समर्पित प्रेरणादायी बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी न्यायाधिपति श्री नगेन्द्र कुमार जी जैन के निरन्तर अभ्युदय एवं सपरिवार उज्ज्वल एवं उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु शतायुष्य की उत्तम मंगल भावना भाते हैं। शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

डॉ. प्रेमचन्द रावका

पूर्व प्रोफेसर, राजकीय महाराजा संस्कृत कॉलेज, जयपुर

A Man of Rich Morality

- Prof. B.L. Verma



It gives me immense pleasure to spell out some qualities of multi-character personality of Justice N.K. Jain, who has played a pivotal role in socio-legal reconstruction. Justice N.K. Jain who has inherited the judicial propriety and integrity from his father, Justice J.P. Jain, has made a mark in the Indian judicial system, while acting as judge, Rajasthan High Court and Chief Justice of Karnataka High Court by his judicial verdicts preferably in the interest of down troddens and havenots of the society. The year 1968 happens to be an important year when both of us joined legal profession, as justice Jain joined the bar of Rajasthan High Court and I Joined the Law teaching in the University of Rajasthan. Thus, I had an opportunity to witness the bar-bench journey of Justice Jain since 1968. I have always found him to be a man of rich morality and of pain redressal attitude for sufferers. As an advocate, Justice Jain fought for obtaining justice to the havenots. As a judge, Justice Jain always tried to systematize the judicial process for speedy Justice and kept the Judicial spirit in the same way as he had in the sports. If we undertake a careful study of his Judicial pronouncements, it becomes evident that Justice Jain had a strict vigil for Judicial transparency and independence, while maintaining equilibrium between legislative intent and demand of Justice. Justice Jain has also proved to be a social thinker, it becomes clear if we go through the books he has written. In his books, Justice Jain depicts a socially relevant path to be followed by human beings. While acting as Chairman of Rajasthan Human Rights Commission, he has contributed immensely for the protection of human rights of sufferers of the society. I have personally witnessed his purpose oriented instructions given to the law students regarding concept of human rights and protection thereof, while addressing the law students at Vidyasthali Law College, Jaipur. Thus, as a man, an advocate, a Judge and a social thinker, Justice N.K. Jain has an unparalleled personality whose contribution in the field of Law, Justice and social reform will be remembered for all the times to come.

Prof. B.L. Verma

Principal, Head & Dean, Faculty of Law, University Law College, Jaipur
Founder Vice- Chancellor University of Kota

मानवीय संवेदनाओं से तरंगित व सकारात्मक दृष्टिकोण के धनी

- न्यायमूर्ति एस.एस.कोठारी



जन्म लेना एक सामान्य बात है परन्तु गुणसम्पन्न जीवन जीना विशेष बात होती है। ऐसे ही व्यक्ति व न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन न्याय जगत के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। मैं उन्हें वर्ष 1990 से जानता हूँ, जब वे राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति नियुक्त हुए। वर्ष 1995 में जब मुझे राज्यपाल महोदय द्वारा हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ निर्णय लेखन के लिए सम्मानित किया गया, तब वे ही हिन्दी विधि सतर्कता समिति के अध्यक्ष पद पर आसीन थे। उनके सम्पर्क में आने पर मैंने अनुभव किया

कि वे सदैव फल की अपेक्षा कर्म को महत्व देते हैं। एक अच्छे खिलाड़ी होने की पृष्ठभूमि में उनमें खेल भावना कूट-कूट कर भरी है और इसी कारण वे नयी पीढ़ी को अनवरत रूप से खेलों से सम्बद्ध कर इस क्षेत्र में अपना अप्रतिम योगदान दे रहे हैं। निष्कपटता का गुण उनके व्यक्तित्व में प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। सह अस्तित्व, सहिष्णुता व समता को जीवन में धारण कर अपने सम्पर्क में आने वाले के छोटे से छोटे अच्छे कार्य को सराहना उनके स्वभाव का अंग है। उल्लेखनीय है कि लोक कल्याण के सभी छोटे बड़े कार्यों से वे स्वयं को सम्बद्ध कर लेते हैं और उनको तार्किक निष्कर्ष पर पहुँचा देने की दक्षता एवं क्षमता मानों परम पिता परमेश्वर ने, उन्हें प्रदान कर रखी है।

न्यायमूर्ति श्री जैन राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, तदुपरान्त मद्रास व कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश के मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष व लोकायुक्त तथा अध्यक्ष, राजस्थान मानवाधिकार आयोग जैसे गरिमामय पदों पर आसीन रहे किन्तु इसका लेशमात्र भी दम्भ मैंने उनमें नहीं देखा। सरलता, उदारता व नम्रता उनकी पहचान है। प्रतीत होता है कि 'विद्या ददाति विनयम्' इस सूक्ति को उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ किया हुआ है। वर्ष 2003 में जब वे मुख्य न्यायाधीश, कर्नाटक उच्च न्यायालय के पद पर आसीन थे, तब मेरा परिवार सहित बेंगलूर में उनके पास जाना हुआ। हमारे पहुँचने से प्रस्थान तक जो आतिथ्य उन्होंने प्रदान किया, वह मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव है।

अध्यक्ष, राजस्थान मानवाधिकार आयोग के पद पर कार्यरत रह आपने इस संस्था की कार्यप्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन कर, अनेक नवाचार समाविष्ट कर प्रवर्तित किये। जिला एवं सेशन न्यायाधीश, राजसमन्द के पद पर रहते हुए मैं उनके ऐसे कार्यों का असंदिग्ध साक्षी रहा। आपने सामाजिक संगठनों के माध्यम से संविधान में वर्णित नागरिकों के मूल दायित्वों का पालन करवाने हेतु जन-जन को प्रेरित करने का एक अभियान संचालित किया, जो अपने आपमें अनूठा व सफल प्रयोग था।

मैंने न्यायाधिपति श्री जैन को आयु के इस मोड़ पर भी अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग करते हुए सार्वजनिक हित के कार्यों में सदैव पूर्ण मनोयोग व समर्पण भाव से योगदान देते हुए

पाया है। आज भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसी अनेक संस्थाओं में उनकी सहभागिता है जो नागरिकों के सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक उत्थान के लिए सतत प्रयासरत हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन मानवीय संवेदनाओं से तरंगित व सकारात्मक दृष्टिकोण से संचालित रहा है। आपके व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ परिचय यह कहकर दिया जा सकता है कि आप सदैव व्यक्ति के सद्गुणों की प्रतिष्ठा कर उसे सम्मान देते हैं और उसके अवगुणों पर दृष्टिपात न करने के मनोभाव से ओतप्रोत हैं। इसे आपके सफल जीवन का कुँजीफलक कहा जा सकता है। आपके सार्वजनिक जीवन में उद्देश्य और यथार्थ आधारित चिंतन की झलक परिलक्षित होती है, जिसके कारण आप 'अज्ञात शत्रु' के रूप में जाने, माने व पहचाने जाते हैं।

ऐसे व्यक्तित्व के धनी माननीय न्यायमूर्ति श्री जैन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखना एक सुखद अनुभव है। मुझे गत वर्षों में उनका विशेष स्नेह प्राप्त हुआ है और यह स्नेह व आशीर्वाद इसी प्रकार बना रहे, यह कामना है। उनके जीवन-वृत्त के प्रकाशन के अवसर पर मैं अपनी ओर से उनके सुखद व सफल जीवन की कामना करते हुए यह आशा करता हूँ कि उनकी चेतना समाज को दिशा दिखायेगी तथा अधिकाधिक जन और विशेषतः आज की युवा पीढ़ी उनके वैयक्तिक गुणों से प्रेरणा ले अपनी प्रगति व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगी। प्रभु करे, वे अनवरत अभ्युदय व निःश्रेयस की ओर अग्रसर हो नैरोग्यपूर्ण शतायु प्राप्त करें।

शुभेच्छु
न्यायमूर्ति एस.एस. कोठारी
लोकायुक्त राजस्थान

माननीय न्यायमूर्ति श्री नवीन सिन्हा, मुख्य न्यायाधिपति राजस्थान
की शपथ ग्रहण के पश्चात् मुख्यमंत्री के साथ



Qualities of Jain Sahib

- Sudhir Gupta



Justice Shri Nagendra Kumar Jain, a renowned personality and a well known and respected name in legal, judicial, sports, philanthropic, charitable, educational, social and religious circles, is to me, a name synonymous with modesty, simplicity, humility and magnanimity.

Speaking of him, I am reminded of the year 1985. My law final year result was out and I had a client, the renowned law firm, Little and Co., Mumbai, wanting to file a petition in a matter involving important issues and high stakes. They expressed their interest in wanting to engage me provided I was enrolled as a lawyer. They were willing to wait but only for a couple of days for my enrolment. Else they were to entrust the case to some other lawyer as there was an urgency. I was informed that the members of the Enrolment Committee of Bar Council being at Jaipur and Jodhpur, enrolment could at best be by circulation by post, which was time consuming. To obtain the enrolment in a day or two, was, therefore, a challenge.

Shri Nagendra Kumar Jain, was then Chairman of the Bar Council of Rajasthan. I had known him, though very briefly, through my father Shri Balbhadra Prasad Gupta, Senior Advocate and heard of him from many others, as a soft and a kind person always ready to offer a helping hand to all, particularly the young lawyers. I was, therefore, encouraged to meet him. Upon my requesting him and impressing upon him the urgency of my enrollment, to my pleasant surprise and true to his reputation and personality, he offered to travel with me to Jodhpur. Within 24 hours, I was enrolled as an Advocate with the Bar Council of Rajasthan and could file my first power in the matter, which resulted in getting me a string of cases. The credit goes entirely to Justice Jain Sahib.

Traveling with Justice Jain Sahib was a blessing in disguise. I had the fortune to hear from him his experiences at the Bar and life in general which I must confess, laid the foundation of my conduct and approach in the profession and my personal life as well. He would often say, *"I have been an active sportsman and all my actions and approach to life are guided by sportsman spirit. One should look at and live life like a true sportsman."* His words have become my life motto and a source of guidance at all times.

Joining the Bar, kept me connected and actively associated with him. Over the years of practice at the Bar and interactions with him, I found him to be a selfless person with large spirit of magnanimity and immense patience and perseverance. He was in touch on one-to-one basis with almost all the lawyers, always readily, willingly and enthusiastically helping and guiding them in their endeavours. He would never be seen sitting or standing alone or idle and would always be busy helping, advising or planning some event or the other for the benefit of lawyers.

I'm reminded of several conferences of the Bar Council which he organized successfully and effortlessly, involving the young lawyers, so as to educate, train and motivate them for doing similar things in future. To him, mere practicing in the court was not enough. For the overall development of a lawyer, it was important to be involved in academic and social activities. Speaking for myself, my holding of the historical SAARC law international conference at Jaipur in the year 2002 and the UIA and Law Asia Int. Conference in the year 2009 also at Jaipur, were motivated by my participation in Seminars and Conferences organized by him.

In my 38 years of practice at the bar, I have met and interacted with a large number of legal luminaries and others of repute in their respective fields. But I am yet to come across a person as simple, sober, kind, magnanimous, helpful, modest and humble as he. He has held several very high and prestigious offices such as Chief Justice of Madras, chief Justice of Karnataka, Chairman, Human Rights Commission, Lokayukta, etc. but upto this day he remains unchanged and is the same as he was many many years ago not only to me but to one and all.

- Sudhir Gupta
Senior Advocate



After Oath Ceremony at Madras Sarv Shri R.K. Kala, Justice Sinha, Justice R.M. Lodha with Justice Y.R. Meena J.K. Singhi, Sudhir Gupta and Rajendra Bhandari

As I know him

Justice N.K. Jain : A Paragon of Human Virtues

-Dr. Narendra Sharma "Kusum"



My association with Justice Jain has been quite long and I have found in him a rare amalgamation of work culture and human virtues worthy of emulation. His achievements in various spheres of his activities, especially Judiciary, have been singularly distinctive. I deem it as a special privilege to put on record my highest appreciation for his personal attributes of character manifested in the qualities of head and heart. In fact, to be in his company is to be in the company of a noble human being who hardly cares to realize as to how great he is in his own opinion.

I believe this kind of self-effacement is very rare, particularly in a world where people with little worth relentlessly hanker after undeserved publicity and recognition. His outlook of life has been shaped by his sustained adherence to and practice of certain human values like largeheartedness, compassion, moral probity and wider human concern. His humility is so disarming that one who meets him for the first time can hardly believe that he is meeting a person crowned with so many achievements in his life. Arrogance is quite alien to him. He is really a paragon of human values, which are unfortunately, at a low ebb in present time.

There is a popular saying : "some are born great, some achieve greatness and there are people; greatness is thrust upon them." He is born great not because his father was Judge but because he is the worthy son of a worthy father. He has achieved greatness by his contribution not only in the field of Judiciary but also in the society at large. He was born in a Jain family and he belongs to its life style marked with purity and high ideals of human conduct. Thus he has made for himself a special niche in society.

In the field of legal literacy and Human Rights awareness drive, particularly in Rajasthan, he has played a pioneering role. Apart from bringing a number of reforms in the Judiciary, his emphasis on Rights versus Duties has made him a man of much consequence in the country. He is of the firm opinion that if everybody discharges his or her duty, the violation of rights and violation of human rights will automatically be

curbed and reduced. In fact, it is a great message to all of us where people are more conscious of their rights rather than their duties. It is indeed the need of the hour that our rights and duties must go hand in hand. It will certainly help in combating a number of present day's social problems.

It is heartening as well as amazing to note that Justice Jain has been a state level Badminton player, who played this game for 15 years and won commendable laurels for his excellent and outstanding performance.

It is pleasing to see that a player could reach such a high pinnacle of glory in judiciary where he had the rare opportunity of holding the highest positions representing various assignments of much credit. It may be of much interest to note that he has always lived up to the spirit of a player in every walk of his life. He seems to behave in the message of the Gita that "*Action is thy duty; reward is not thy concern.*" This attitude to life has helped him in having an equipoise in day-to-day life. He is righteous, God-fearing and humane to the very core. Even the highest success in life has not turned his head, he is a man down-to-the earth. About his spirit of a player, a few lines of an English Poet co-incidentally flash in my mind :

Play up, play up, play up the game

To set the cause above renown

To love the game beyond the prize.

In fact, it is very difficult for a person to play a game beyond prize.

I recall here an occasional meeting with Justice Jain long back. It was in Mahrishi Dayanand Law College, Baraf Khana, Jaipur where we had a chance to meet on the campus where National Seminar of Human Rights was being organized. As Chairman of Human Rights Commission, Rajasthan, he was invited as the Chief Guest. He had brought some posters relating to Human Rights with him for distribution. It had happened there I had a chance to look at one of the posters. As a teacher of English, my eyes fell on some of the errors in English in the poster which I pointed out to him and suggested to him correction. Despite all his majestic statue as a Justice, he appreciated my suggestions and promised to get the mistakes corrected in future.

Though it was not a very big thing to remember but he still remembers it and repeats so often his gratitude to me. He has undoubtedly attained his goal by his unstinted devotion to duty and

undeterred will to do as well as he can do in life. He seems to be inspired by the message of the Gita that "Yoga is dexterity in action." He is a veritable Karmayogi. H.W. Longfellow, an English poet, perhaps must be having in his mind people like Justice Jain, when he wrote :

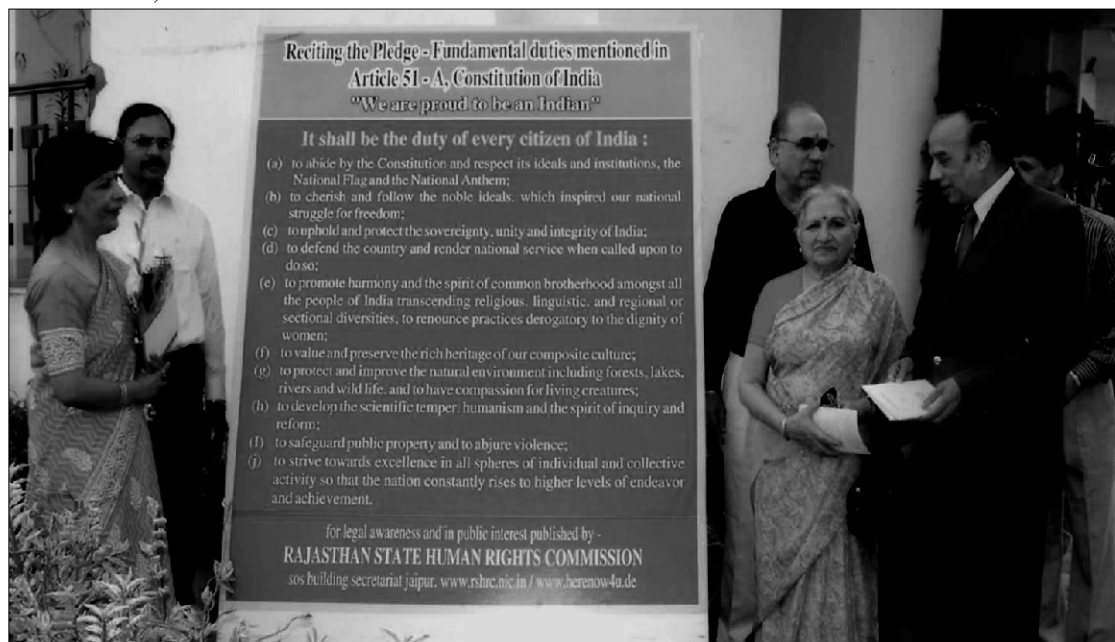
*"Heights by great men reached and kept
Were not attained by sudden flights
But, they, when their companion slept
Were tailing upward in the night."*

I cherish my relationship with him from the very core of my heart. For me it is a priceless possession. There is much to learn from him. He is an emblem of piety, graceful conduct, empathy and concern for others. I wish him a long, purposeful, healthy life coupled with both physical and mental agility so that we may be benefitted by his valuable contribution to society which he has been incessantly rendering in his own way. As an optimist he is our role model. Like Robert Browning , veteran English poet, he might say :

*"Grow old along with me
The Best is yet to be."*

Dr. Narendra Sharma "Kusum"

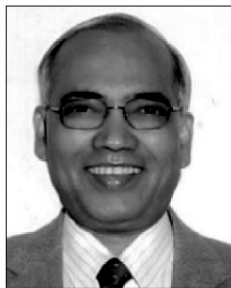
Article 51-A, Constitution of India ▼



In a Function, Vice Chancellor Kanta Ahuja, UOR, Director and Principal of DAV School

A Sportsman Judge

- Justice N. K. Patil



A Pole Star emerged in the skies of Alwar, Rajasthan- on 20th October, 1942 and was vociferously named as Nagendra by his father, Late Justice J. P. Jain.

As the Saying goes by, 'the Star shines by itself, the young Nagnedra Jain gradually grew up into a multifaceted and all-round personality, excelling in all walks of life — be it sports, be it literature, be it academics or be it society at large! He virtually developed the habit and taste of outshining in whichever field he delved deep.

The young and stout boy eventually opted for Judiciary as three P's his life - Passion, Perseverance and Profession. He is a strong supporter of Human Rights Cause.

He is a down-to-earth, social, humble and noble person, whose heart beats for the upliftment of the downtrodden and the poorest of the poor strata of the society.

He is a lighthouse and iconic figure, to be imitated by one and all in life. He is the person who preaches only those sermons and commandments which he first practices himself. One exceptional virtue I would like to adore about him is that he never loses his patience and believes in the proverb, 'slow and steady wins the race' and always uses the pet words, "slowly-slowly, we will achieve the targets".

His main doctrine is that every Right has got a corresponding Duty and both go hand-in-hand. He believes that the Liberty does not descend to a person; it must be earned before it can be enjoyed!

He has left no stone unturned to see to it that even the poorest person gets easy access to the Legal recourse to redress his grievance in an amicable manner by way of recommending constitution of Circuit Benches at Dharwad and Gullburga regions taking into consideration socio-economic and educational-background as also instigating different NGOs to create legal awareness in the masses.

The other most salient facet of his life-portrait or caricature is that he has written several-books on legal- awareness regarding reforms, human rights, legal literacy, equity and social-justice. He has assumed many incarnations or avtaars in his life — Education, Sportsman, Advocate, Bar Associations, Bar Council, Judge, Chief Justice, Lokayukta, Chairperson of Human Rights Commission and President — Digambar Jain Atishaya Kshetra, Shri Mahaveer Ji.

Justice N.K. Jain and Mrs. Jain together constituted a marvellous combination, carved out by the God, who felt overjoyed while organizing 'get-togethers' on different occasions with their sister and brother Judges.

I fondly remember his undergoing the customary practice of "Kshmavani Parv" or forgiveness, wherein the followers of Jain Dharma Seek pardon from the God for their wrong –doings or misdeeds committed knowingly or unknowingly by them and pledge to dedicate their life for the overall betterment of the humanity at large in the times to come. We brother Judges reciprocate by responding his letter of "Kshmavani Parv" or forgiveness till date.

Last but not the least, I would like to share here that Justice N. K. Jain had always been like an elder Brother, a friend in need to me and, above all, a humble human being, who is accessible to one and all, a unique quality bestowed by the Almighty God !

I pray to the Almighty God to bestow upon him good health, mental peace and prosperity in all his future endeavors too.

- Justice N.K. Patil

Former Judge, Karnataka High court
Judicial Member, Appellate Tribunal for Electricity



**In a Function - Governor of Rajasthan Justice Anshuman Singh with
Other Hon'ble Judges & Judicial Officer at Judicial Academy, Bangaluru**

Glorious Achievements of Jain Sahib as Chief Justice

- Justice P. Thangavel



Justice N.K. Jain was elevated After elevation as Judge of High Court, Rajasthan on 20.07.1990, His Lordship Justice Jain stepped in Tamil Nadu along with Madam and served as Judge and as Hon'ble Chief Justice from 1997 to 2001, when the Hon'ble Chief Justice was transferred to High Court of Karnataka as Chief Justice. As Chief Justice, His Lordship, with the assistance and advice of madam on Menu, used to arrange lunch or dinner in the lawns of Chief Justice Bungalow inviting all Hon'ble Judges and their wives and used to spend time with joy more particularly Madam used to mingle with Judges' wives freely and affectionately without any ego. Such attitude of madam, the First Lady of Judicial fraternity of Tamil Nadu, exhibited her greatness to one and all, whereby increasing the image of His Lordship about "Virunthombal".

I found His Lordship was very clear in his understanding and his grasp was very good, His Lordship behaved in the court like a gentleman and there was no discrimination between senior and junior lawyers.

I had the opportunity to sit with Hon'ble Justice N. K. Jain in the Second Bench and after elevation, as Chief Justice in First Bench. I will be failing in my duty, if I omit to mention a few instances about His Lordship's judicial approach. There was litigation with regard to P. G. Medical Admission in Tamil Nadu and the said matter was heard by the First Bench, headed by the Hon'ble Chief Justice and decision was rendered by that Bench. In another case, similar issue was raised but was listed before Second Bench headed by His Lordship Justice N. K. Jain. I was one of the two Judges in the Second Bench. After hearing the matter, Justice N. K. Jain took a view contrary to the first bench and recommended to constitute a larger Bench to decide the issue. Hon'ble Chief Justice had gone through the judgement of Second Bench, called our Hon'ble Justice N. K. Jain to the Chamber of Chief Justice and appreciated the view taken by His Lordship and requested him to sit in the Larger Bench and confirm the views of Second Bench. But His Lordship very gracefully withdrew himself to decide the issue referred to Larger Bench. However Chief Justice asked me to sit in the larger bench. The Larger Bench concurred with the view of Second Bench.

A case which arose out of political rivalry in Tamil Nadu was listed before First Bench headed by Hon'ble Chief Justice N. K. Jain. I was sitting

with His Lordship as Second Judge. Both parties were fighting before First Bench for an order. After hearing the matter at length, His Lordship pronounced an order in open court immediately and that order of court lead the party later to close the proceeding finding it to be in-fructuous.

One or two practising Advocates in High Court Madras had not conducted themselves before a Hon'ble sitting Judge of High Court, Madras and the matter was brought to the notice of Hon'ble Chief Justice N.K. Jain. After considering the information and materials furnished before His Lordship, a contempt of court proceeding was initiated before a Bench headed by a senior most Judge of High Court, Madras and the matter was heard by that Bench. Thereafter, the said matter had not seen the light of the day due to lapse of time and due to the understanding arrived at between both parties. These kinds of judicial approach made the legal field to understand that His Lordship always took apt decisions depending on the gravity of the matter for rendering justice to litigant or aggrieved person without fear or favour.

Coming to the Administrative side of High Court Madras, there was murmur that appointments of staff are not done judiciously. During His Lordship tenure, there were about 185 vacancies in the High Court. Written examination was conducted by Data Centre at Chennai and Candidates were shortlisted for interview. Lordship constituted a selection committee consisting of one senior most Judge and myself. While I had a discussion with regard to selection of candidates, I informed about following Rule of the reservation to accommodate all classes of candidates. His Lordship readily agreed and instructed to implement Rule of Reservation in recruitment of staff in High Court, Madras. Selection was made following Rule of Reservation and selected 185 candidates. The list was approved then and there by His Lordship. This shows as to how His Lordship rendered Social Justice in Judiciary in the State of Tamilnadu.

We found madam Smt. Aruna Jaina cultured, soft spoken, pious lady with humble and simple life style & affectionate in nature.

I pray to God for his long life and good health.

- Justice P. Thangavel
Former Judge, High Court Madras



"Don't Tell People About Your Dreams.
Show Them !"

व्यवहार में अहम को कोई स्थान नहीं



-जस्टिस माणक मोहता

मेरे लिये यह परम सौभाग्य एवं सुखद अवसर है कि मुझे आदरणीय मुख्य न्यायाधिपति श्री एन.के.जैन साहब के प्रति अपने उद्गार एवं संस्मरण प्रकट करने का मौका प्राप्त हुआ।

माननीय न्यायाधीश श्री जैन साहब के साथ मेरा परिचय लम्बे समय से रहा। इस वजह से उन्हें नजदीक से समझने का मौका मिला। आदरणीय जज साहब शुरू से एक अच्छे खिलाड़ी भी रहे, खेल की भावना को उन्होंने अपने जीवन में भी उतारा। उनके जीवन की शैली, कार्य करने की पद्धति, स्वच्छ, सुन्दर एवं उच्च स्तरीय है। उनके व्यवहार में अहम को कोई स्थान नहीं मिला जिससे उनकी छवि अपने आप में विशिष्ट है। सभी के लिये अनुकरणीय है।

आत्मा के गुण जैसे सच बोलना, सभी का आदर करना, अनुशासन में रहना, संवेदनशील, जरूरी काम अपने आप करना, सेवाभाव, तालमेल, समर्पण भावना, सहयोग, सहभाव व परस्पर सामंजस्य बनाये रखना, विवेक से अपने ज्ञान का सही इस्तेमाल कर सही फैसला लेना आदि गुणों को अपने आचरण में डालकर क्रियान्वित करने का प्रयास किया।

आदरणीय जज साहब की कार्य करने के प्रति लगन, समर्पण, निष्ठा, निर्भीकता, निष्पक्षता, धैर्य एवं सभी परिस्थितियों में सम रहने की प्रवृत्ति भी अनुकरणीय है। समाज के सभी क्षेत्रों में उनके कार्य का मूल्यवान योगदान रहा।

मैं उनकी लम्बी उम्र एवम् कुशल स्वास्थ्य के प्रति अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सादर।

जस्टिस माणक मोहता

पूर्व न्यायाधीश

राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर



" Sometimes Later Becomes Never - Do It Now "

Satisfaction lies in the effort, not in the attainment,
full effort is full victory - Mahatma Gandhi

As I Know Mr. Justice N.K. Jain

-Justice Shivaraj V. Patil



Mr. Justice N.K. Jain and myself were together in High Court of Madras. I went to Rajasthan as Chief Justice of High Court of Rajasthan. He became Chief Justice of High Court of Madras. Thus I had occasions of meeting and interacting and also working together for some time and on some occasions. Knowing him I felt that, he was a very active sports person in the field, prior to his becoming a Judge. He brought with him the spirit of Sportsmanship too to the post of Judgeship. He is humble, unassuming and known for his practical wisdom. As Chief Justice of two High Courts he was able to carry on administration of justice smoothly and pleasantly.

My best wishes to him for a long, healthy and peaceful life in the days to come while keeping himself usefully engaged to serve the society which he is very much doing.

- Justice Shivaraj V. Patil

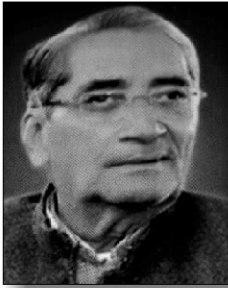
Former Judge Supreme Court of India
and Member National Human Rights Commission



Justice S.R. Patil, CJ Rajasthan and Family with My Family
at Jaipur Residence (22 Jan. 1999)

न्याय तो करना ही होगा

- वेद व्यास



श्री नगेन्द्र कुमार जैन को मैं 1970-75 के बीच से जानता हूँ। तब मैं आकाशवाणी जयपुर से राजस्थानी में समाचार पढ़ता था और श्री नगेन्द्र कुमार जैन राजस्थान हाईकोर्ट में बार काउंसिल के पदाधिकारी थे। न्याय की दुनिया में तब मेरी कोई भी गंभीर समझ नहीं थी। तब श्री जैन सहज रूप से बार काउंसिल की गतिविधियों के समाचार मेरे पास प्रसारण के लिये भिजवा देते थे और मैं उनका सहयोग कर दिया करता था।

तब से अब तक न्याय की गंगा में बहुत पानी बह चुका है और मुझे भारत की न्यायिक व्यवस्था के विविध रूप, रस और रंग देखने समझने को मिले हैं। फिर श्री नगेन्द्र जैन, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने और फिर मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष भी रहे। राष्ट्रीय मंच पर न्यायाधीश के रूप में सम्मानित भी हुए हैं और सेवानिवृत्ति के बाद जयपुर लौट आये।

मैंने इस पुराने भूले बिसरे परिचय को जिस तरह बने रहते देखा है, और आज ऐसा अनुभव करता हूँ कि श्री नगेन्द्र कुमार जैन में न्यायाधीश होने और रहने जैसा कोई दिखावा और आत्मघोषणाओं का कोई अहंकार नहीं है। ये एक सहज मानवीय स्वभाव और सामाजिक सरोकारों को समर्पित व्यक्ति अधिक हैं और मेरे प्रति आज भी उनके मन में मित्र भाव है।

मैं जहाँ कलम का सिपाही, एक साहित्यकार और पत्रकार हूँ, वहाँ श्री नगेन्द्र जैन न्याय के प्रवक्ता और सिपाही हैं। मुझे अपने जीवन में मुंसिफ कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक के अनेक न्यायाधीशों के साथ संवाद, सत्संग और आत्मीयता भरे रिश्ते याद हैं और मैं बार तथा बैंच के अनेक गणमान्य लोगों के बीच से गुजरा हूँ। मैंने देखा है कि हमारी न्याय व्यवस्था आज भी एक साधारण व्यक्ति को सहज और सुलभ नहीं है तथा हर न्यायाधीश सामाजिक-आर्थिक न्याय की तलाश में थक हार कर घर लौट रहा है। इस स्थिति में बदलते समय और समाज के चक्रव्यूह में श्री नगेन्द्र कुमार मुझे एक सामाजिक कार्यकर्ता की तरह कार्य करते हुए इसलिए भी मित्रवत लगते हैं कि वो जीवन के अंतिम चरण में भी विधिक साक्षरता की अलख जगाते रहे हैं। सामाजिक सांस्कृतिक का पूरा ताना-बाना श्री नगेन्द्र जैन की जीवन चर्या में बोलता है।

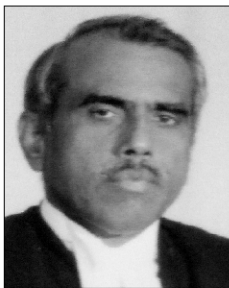
राजस्थान के मानवाधिकार आयोग में रहते हुए श्री नगेन्द्र जैन ने विधिक साक्षरता का अभियान चलाया और संविधान और लोकतंत्र को जानने की पुस्तकमाला प्रकाशित की। ऐसा काम शायद कोई दूसरा आयोग नहीं कर पाया है। राजस्थान के स्कूलों में लाखों बच्चों के बीच श्री नगेन्द्र जैन का योगदान मुझे प्रेरणादायक लगता है।

श्री नगेन्द्र कुमार जैन की आत्मीयता पूर्ण मित्रता के कारण अपने मन की बात मैं कह पा रहा हूँ कि श्री नगेन्द्र कुमार जैन एक साधारण पोशाक में असाधारण प्रतिभा के धनी हैं, और सजग तथा सक्रिय सामाजिक सरोकारों की हलचल मचाने वाले हैं, क्योंकि मैं कभी उनके भीतर नहीं गया हूँ और मैंने उनको बाहर रहकर ही देखा समझा है। अतः कहना चाहता हूँ कि एक वकील को और न्यायाधीश को उसके मन, वचन और कार्य की त्रिवेणी के बीच आचरण और व्यवहार से परखा जाना चाहिए। मुझे खुशी है कि श्री नगेन्द्र कुमार जैन के न्यायिक और सामाजिक अवदान को आने वाला समय आदर से रेखांकित करेगा।

वेद व्यास, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार

Quick Disposal of Cases as Chief Justice, Madras

- Justice Dr. A.K. Rajan



I feel proud and happy and it is a pleasure to write and share some of my happy moments with Hon'ble Justice Nagendra Kumar Jain. I am one of the fortunate few to have been sworn in as the judge of one of the three Chartered High Courts in India, the prestigious Madras High Court, on 29th September 2000. Though I did not get the opportunity to sit along with the Chief Justice N. K. Jain, I have seen him handling many important and sensitive cases in Madras high Court. As Chief Justice of Madras High Court he had shown interest in providing all help to the young lawyers who appeared before him. Every lawyer had the satisfaction of getting a fair and patient hearing. He was never harsh towards any member of the Bar. That helped many young lawyers to get good experience and blossom as a seasoned lawyer.

The hospitality of Justice N.K. Jain is well known. Mrs. Aruna Jain's way of reception of visitors and guests in their house always brings back then happy memories and it was a pleasant memory for all the judges and their families, including me and my wife.

Justice Jain evinced real interest in speedy disposal of cases; he encouraged the process of settlement out of court, especially in Lok-Adalats. Thousands of cases were disposed in the State of Tamil Nadu due to the encouragement and appreciation given by Justice Jain. Justice Jain had shown interest in the legal education also. Once during the year 2001, I had the pleasure of accompanying him to Trichirappalli, Govt. Law College, where he gave a scholarly lecture on the topic he had chosen. Then I came to know the interest he had in the legal education and the fatherly affection he had for the students. The protection of Human Rights was another subject that was dear to his heart. He never hesitated to take steps in protecting the people from any violation of Human Rights.

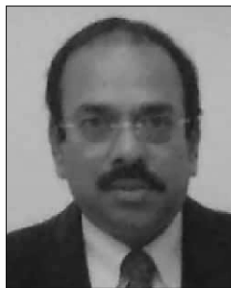
I understand that Samachar Vichar Sansthan Jaipur, is publishing 'Glimpses of personality of Mr. Justice N.K. Jain, for the benefit of young generation. I wish all success in their endeavor. I wish Justice N.K. Jain a long and healthy life.

Justice Dr. A.K. Rajan

Former Judge, Madras High Court

Sweet Memories of My Association with Jain Sahib

- Justice A. Kulasekaran



I am very happy that Samachar Vichar Sansthan, Jaipur and its Associates have rightly decided to publish glimpses of his Lordship Justice Nagendra Kumar Jain and I share my sweet and unforgettable memories of my life when His lordship was Chief Justice of Madras High Court.

As a Lawyer, I have appeared before the Division Bench Presided over by his Lordship on several occasions presenting civil, criminal and other matters. His Lordship's rich experience as a Lawyer and as Judge of High Courts gained admirable grasping and extraordinary memory power to understand the issue and dispose of even complicated cases in a few minutes to the satisfaction of both the sides.

I saw in one matter which was dismissed after hot discussions at admission stage. Justice Jain *Suo Moto* adjourned the next matter of the same lawyer to other date. This shows his way of working, behaviour and fairness.

His lordship has recommended & appointed maximum number of Judges in this High Court and he was pleased to recommend my name as well, which is one of the important sweet memories of my life. Madam Late Smt. Aruna Jain and His lordship were cute couple, made for each other. They treated every body equally with great love and affection.

His lordship as Chief Justice of Madras High Court, has disposed of several thousand cases most of which are land mark Judgments. He also motivated and got substantial work from the Judges of subordinate courts throughout the state. The Advocate General appreciated his good qualities and functioning during the welcome speech as well as at the time of farewell when he was transferred as Chief Justice to Karnataka High Court.

To my mind, this book will surely help and inspire the new generation of lawyers and Judges to achieve justice by maintaining ethical standards in life and by maintaining rule of law. His lordship for his contribution will be remembered for long. I pray to Almighty for his lordship's long, good health, peaceful as well as successful life.

Justice A. Kulasekaran
Former Judge Madras High Court

A Friend, A Philosopher and A Guide

- S.F. Akbar



The efficacy of democracy consists in how effective the judiciary is in a democratic polity. Administration of justice is of paramount importance and necessarily the institution of judiciary is to be manned by men of erudition, impeccable integrity and unswerving commitment to uphold the rule of law.

The High Court of Judicature at Madras is one of the few Chartered High Courts and has for several years contributed substantially to the development of law. To lead the State Judiciary as Chief Justice of the High Court, is certainly prestigious but at the same time, the responsibilities are onerous. **Hon'ble Justice Thiru N.K.Jain**, adorned Madras High Court as its Chief Justice for nearly four years and later on as Chief Justice of Karnataka High Court. During his tenure as Chief Justice, he was also the Executive Chairman of the State Legal Services Authority. I had the singular privilege of serving as Member Secretary of Tamil Nadu State Legal Services Authority and I had moved with Justice N.K.Jain, in my official capacity. Justice N.K.Jain was very keen about ensuring speedy justice to the litigant public. He found that the conventional litigation process would not meet the requirements fully and adequately and thought it expedient to devise alternative methods by which the efforts of the regular judiciary to dispose of cases are supplemented. The Legal Aid movement in Tamil Nadu was then at its lowest ebb and Justice N.K.Jain gave a fillip to the legal aid movement and revamped Tamil Nadu State Legal Services Authority, infusing new blood. He made the movement animate and vibrant. Justice N.K.Jain abhorred a hyper technical approach and his focus was on doing justice to the litigant public who are the ultimate consumers of justice, the hyper-technicalities of law notwithstanding. It was only his sound strategy that led to disposal of thousands of land acquisition and motor accident claims resulting in disbursal of crores of rupees to the litigants who sought justice from the courts with a begging bowl.

Deeply touched by the plight of the owners of the land, whose lands have been acquired for the purpose of Neyveli Lignite Corporation (N.L.C.), Justice N.K. Jain, organised a Mega Lok Adalat wherein the

target of mass disposal of cases was achieved and resultantly crores of rupees have been disbursed by way of compensation to the owners of the land thereby rushing succor and relief to the land owners. The efforts taken by Justice N.K. Jain, decisively impacted on the backlog of arrears of cases pending on the file of the Courts in Tamil Nadu. Justice N.K. Jain, firmly believed that legal literacy and awareness for the people at large is a sine-qua-non and in that direction caused to be organized innumerable legal literacy and awareness camps throughout the length and breadth of Tamil Nadu. The idea is to give the public the correct perspective while pursuing legal remedies and to prevent frivolous, vexatious legal proceedings.

It was with that object in mind, Justice N.K. Jain, as Executive Chairman and Patron-in-Chief of the State Legal Services Authority caused the publication of several booklets on various enactments of day-to-day utility for the public. Illustratively, Tamilnadu State Legal Services Authority, under the direction and guidance of Justice N.K. Jain, rendered in simple readable Tamil, booklets on Consumer Protection Act, Hindu Marriages Act, Protection of Civil Rights Act, 1955, The Hindu Minority and Guardianship Act 1956 etc., as also legal guidance on certain matters of public interest such as Protection given to the women folk under the provisions of IPC, Protection to women folk under various enactments other than IPC, etc. As many as 15 such booklets have been published to inculcate first principles of legal knowledge to the general public, for after-all, ignorance of law will not be an excuse in a court of law. The various booklets invariably have an introduction from the then Honble Chief Justice N.K. Jain and a foreword from Judges of the High Court and they were released by the Judges of the Supreme Court or Senior Judges of the High Court and received by Judges of the High Court or some dignitaries. Those booklets are of great and long lasting relevance in imparting legal literacy and awareness to the people.

Pained by the plight of under trials languishing in the prisons in Tamil Nadu, Justice N.K. Jain, in deference to the guidelines of the National Legal Services Authority, organized Legal Aid Cells and Prison Adalats at Central Prisons Trichy, and Vellore and in the Special Prison for Women at Vellore.

As a matter of fact, he, in his endeavour to create legal literacy and awareness, directed me as the then Member Secretary of Tamil Nadu

State Legal Services Authority to explain the multifarious activities of the legal services authority through social media, particularly Sun T.V., a popular television channel in the South. That apart, on the instructions of Justice N.K. Jain, a One Day Seminar on different dimensions of Legal Services was held at Dr. Ambedkar Govt Law College, Chennai, during January 2001. It is on his directions that quarterly official Newsletter of Tamil Nadu State Legal Services Authority, "**Sattappani Murasu**" (voice of legal services) was prepared and released in April, 2001.

Justice N.K. Jain is unassuming and self-effacing and treated everyone including his subordinates with all courtesy and kindness. He is extremely humane and considerate. He took care to create a conducive climate for all concerned to work dedicatedly and produce the best of results.

I deem it a great privilege to have had an opportunity to work under the Stewardship of Honble Justice Thiru N.K. Jain, a multi-faceted personality whose hallmarks are love, kindness and courtesy.

My prayers for his welfare and well-being ;

LONG LIVE Justice N.K. Jain.

-S.F. Akbar

District Judge (Retd)

Formerly State Information Commissioner

Chennai – 600 096



Justice K.T. Thomas Judge, SC, Judicial Officer and Secretary S.F. Akbar at Thanjavur

सबके लिये प्रेरणादायक व्यक्तित्व

- निर्मल कुमार जैन



यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप आदरणीय न्यायाधिपति श्री नगेन्द्र कुमार जी जैन साहब के प्रेरणादायी व्यक्तित्व पर एक पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं। उनका व्यक्तित्व बच्चों से सीनियर सिटीजन, साधारण मनुष्य से प्रोफेशनल, व्यक्ति से परिवार, समाज व राष्ट्र सबके लिए उपयोगी व आचरण में लाने योग्य है।

आप सरल स्वभावी, सादगी से रहने वाले हैं। आपके सम्पर्क में आने वाले इन गुणों से प्रभावित हैं। आपके साथ कार्य करने वाले अधीनस्थ कर्मचारियों से आपका बड़ा प्रेमपूर्ण व्यवहार रहा है और वे सब भी बड़े आदर से आपका सम्मान करते हैं। उनकी सज्जनता व मिलनसार होने का जिक्र, मेरे मित्रों व रिश्तेदारों, सबने हमेशा किया है।

आपके साथ हाल ही की कर्नाटक यात्रा में बाहुबली के महामस्तकाभिषेक का मेरा अनुभव रहा, कि किस तरह से आपका बैंड बाजे के साथ स्वागत किया गया। परम पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ने अपने आशीर्वाद के साथ बाहुबली की फोटो, सिम्बल व एक सुन्दर व अभूतपूर्व चांदी का कलश भेंट स्वरूप प्रदान किया और साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों को भी छोटे कलश देकर आशीर्वाद दिया। जिसको देखकर हम परिवारजन व उपस्थित लोग अभिभूत हो गए। सभी परिवार जनों को दूसरे रोज सुबह जलाभिषेक के साथ-साथ आपके द्वारा भेजे हुए पंचामृत के कलश से भगवान बाहुबली जी का अभिषेक करवाया। वो हमेशा याद रहेगा।

मुझे भी कई धार्मिक व मानवता के कार्यों में सहयोगी बनने का मौका दिया है। आपका लक्ष्य रहा है कि आर्थिक सहायता सही लोगों तक पहुंचे। धार्मिक कार्यों में कई संस्थाओं से मेरा परिचय कराया और जोड़ा। धार्मिक सिद्धान्तों में आपकी पूर्ण आस्था व निष्ठा है। आपका व्यवहारिक जीवन धर्म के अनुसार दया, करुणा, क्षमा भाव, (क्रोधरहित), उच्च पद पर रहते हुए भी सरल व निराभिमान, पूर्ण रूप से उचित सलाह देने वाले व पथ प्रदर्शक और संतोषीवृत्ति व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है। न्यायिक सोसायटी ने बेंगलोर में सभी जजों को प्लॉट बेचे व दिए। परन्तु आपने प्लॉट नहीं लिया। ऐसे कई और भी उदाहरण हैं।

आपकी प्रबन्ध योग्यता भी सबके लिये अनुकरणीय है। समय की पाबन्दी, लक्ष्यों का चुनाव-उनकी प्लानिंग फिर संसाधन की व्यवस्था और प्रगति की निरन्तर समीक्षा व सुधार आपके गुण हैं। हमेशा अपने आपको सउद्देशीय कार्यों में व्यस्त रखना समय प्रबन्धन का उदाहरण है, जिसे सभी सीनियर सिटीजन ग्रहण कर सकते हैं। आपकी संवाद शैली की विशिष्टता हर व्यक्ति जो सम्पर्क में आता है, को प्रेरणा देती है। आप "Be Happy, I am OK, you are OK" के सिद्धान्त को अमल में लाते हैं। आपने परिवार व रिश्तेदारों को स्नेह एवं गाइड बन कर उचित मार्गदर्शन दिया है। बच्चों के प्रति आपका वात्सल्य समुद्र के समान है।

आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है खेलों में रुचि व खेलों के जमीनी स्तर व बारीकियों को समझना। आप बैडमिंटन के अच्छे खिलाड़ी हैं व राष्ट्रीय खेलों में भाग लेते रहे हैं। भारतीय टीम के आर्ज्वर के रूप में बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) गए। कई विद्यार्थियों व घर के सदस्यों को इस खेल से जोड़ा है।

आपने जनमानस को जागृत करने के लिये जनउपयोगी कई पुस्तकें लिखी। इस काम को सराहा। इस अभियान में सभी समाचार पत्रों ने व कई लोगों ने अपने आप को जोड़कर जागरूकता के कार्यक्रम में योगदान दिया। सामाजिक जनकल्याण, जीवदया, एचआईवी, कैंसर मरीजों के लिए आपका योगदान अद्वितीय है। नेत्र चिकित्सा एवं विकलांगों को कृत्रिम पैर लगाने तथा शिक्षा के लिए योगदान आपने निःस्वार्थ व बिना यश की लालसा से दिया है।

हाल में ही राजस्थान स्टेट स्पोर्ट्स कौंसिल ने आपको खेल कानून में संशोधन, बदलाव व अपने सुझाव देने को कहा। आपकी कमेटी ने समय पर अपने संशोधन व सुझाव दे दिए, जिनको न्यायालय ने भी स्वीकार कर आपके कार्य की प्रशंसा की। परन्तु सरकार में अभी लम्बित है।

आपका हर एक के प्रति प्रेमभाव एवं आत्मीयता तथा कार्यों के लिये जितना भी लिखा जाए थोड़ा है। इस प्रकार उपरोक्त विवरण सभी के लिये जीवन जीने की कला सिखाता है। आशा है हम सब भी प्रेरणा लेंगे।

परमपूज्य स्वामी चारुकीर्ति जी ने माननीय राष्ट्रपति जी व प्रधानमंत्री जी का सम्मान कर विशिष्ट भेंट स्वरूप दिया। श्री नगेन्द्र जी का भी सम्मान कर वैसा ही विशिष्ट कलश भेंट कर आशीर्वाद दिया। उसके लिए हम सभी गौरवान्वित व कृतज्ञ हैं। भगवान से प्रार्थना है कि आप शतायु हों और हम सबको तथा समाज को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे।

निर्मल कुमार जैन

पूर्व उप जनरल मैनेजर, राजस्थान बैंक लिमिटेड

स्वामी जी आशीर्वाद देते हुए



His Lordship Always Caring For The Humanity

- Justice Vijay Bishnoi



It is a matter of immense pleasure that glimpses of Hon'ble Mr. Justice Nagendra Kumar Jain, Former Chief Justice of Madras High and Karnataka Court are going to be published.

In the honour of His Lordship, I would like to share some experience of mine. I started practice as a lawyer in the year 1989 and soon thereafter, His Lordship was elevated as a Judge of Rajasthan High Court in the year 1990. He has a clear understanding with good grasping. He was good to both side. He used to encourage the young lawyers and under His Lordship's guidance, many lawyers learnt a lot.

I would also like to say that when his Lordship remained Member of Bar Council of Rajasthan for a long period, in the year 1987, my father Late Shri Ram Narayan Bishnoi was also a Member of Bar Council of Rajasthan and with the support of his Lordship, my father was elected as Chairman of Bar Council of Rajasthan.

Needless to say that because of his lordship's magnanimity, the young lawyers as they were have achieved their goal in profession.

Last but not the least, when I remember His Lordship's benevolence towards poor litigants, I feel myself proud that a great personality is with us. His Lordship always cares for the humanity. His Lordship became Chairperson of Rajasthan Human Rights Commission. We pray to the Almighty that His lordship's blessings may always shower upon us.

I want to convey my message to the young generation that they should follow the path of altruism of His lordship, so that feeling of living for others would develop in their hearts too.

I heartily congratulate Samachar Vichar Sansthan and its Associates for this great publication

- Justice Vijay Bishnoi
Judge, Rajasthan High Court

Sweet Memory of Time Passed with Jain Sahib

- Justice P.P. Naolekar



I have profound memories of Shri N.K. Jain who was a brother Judge with me during my tenure at Rajasthan High Court. As we moved to Rajasthan (Jodhpur) under the newly implemented transfer policy, it was a totally new experience for us moving to an unknown place of different culture and amongst new people. There was a lot of apprehension, but in retrospective it worked out wonderfully for us. Justice Jain was amongst the first person who made us feel welcome in a totally new environment. The time spent with Shri N.K. Jain passed away in the blink of an eye and this can only be described by Albert Einstein's explanation to his theory of relativity. He explained in simple terms: "If you put your finger in the boiling water, one minute will look like one hour. On the other hand, if you are sitting with your sweet heart or the person you love, one hour would seem like one minute." Shri N.K. Jain has a disarming smile, pleasant disposition, a person whose intelligence is characterized by great knowledge and wisdom, great intellect and contemplation.

Although I had limited opportunity to sit with Justice Jain on Board but within that period I realised he was very quick in taking decision and had sound understanding of Law.

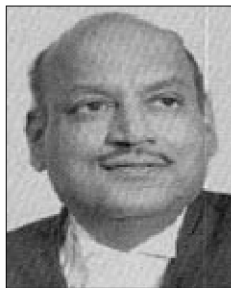
He is also an active social worker. He has always worked for the marginalized and downtrodden communities. He always works towards making the world a better world. Apart from being an eminent jurist Justice N.K. Jain is a true sportsman and was a National Level Badminton Champion. I too, being a sport person, we jelled well on a personal level.

Justice P.P. Naolekar

Former Judge
Supreme Court of India and
Lokayukta, Madhya Pradesh

Justice Nagendra Jain as I Know him

- Justice G. B. Patnaik



A request has been received to pen a few lines about Mr. Justice Jain, to be published in a book. When I sit down to write a few lines, my memory dates back to sometime in October, 1990-91, the exact year I am unable to remember now, when I with my wife and children got down at Jodhpur airport in the evening and were looking for the protocol assistance which we expected from Jodhpur High Court. At that point of time I was a Judge at Odisha High Court and Shri Jain was a Judge in Rajasthan High Court, Jodhpur Bench. Shri Jain immediately on coming to know that I am a Judge of Odisha High Court came forward and inquired about my transport and accommodation and instead of going to his quarters with his family called the protocol of Rajasthan High Court to take me to the High Court guest house at Jodhpur by the High Court vehicle which had been allotted to me. I can never forget that help rendered by Shri Jain and from that day onwards I am in contact with Justice Jain. During our stay at Jodhpur we were invited to his house for dinner and to my pleasant surprise, it was Justice Jain's daughter who was serving us hot chapatis from the oven on the dinner table. This illustrates how humble and yet aristocratic the family is. In course of my conversation with Justice Jain that evening, I had learnt that apart from being in active practice before being elevated as a Judge, he was a very good badminton player and he was also the Chairman of Bar Council of Rajasthan. He was also in the executive council of National Law School, Bangalore. When I came to Supreme Court in the year 1995, Mr. Jain had become a fairly Senior Judge and for a long time he was not being elevated as the Chief Justice of a High Court since Justice A.K. Mathur from Rajasthan who was Senior to Shri Jain was continuing as the Chief Justice of Calcutta High Court. Ultimately Shri Jain was appointed as the Chief Justice of Madras High Court and thereafter he was transferred as Chief Justice of Karnataka High Court. I had the privilege of visiting him both at Madras and Bangalore and I had learnt that he was extremely popular amongst the members of the bar. After his retirement, he has

been taking keen interest in several social activities as well as in the game of Badminton. As I have marked him, he is extremely humble, amiable and is interested in developmental activities of the society. He comes of a legal family and his father Late Justice J.P. Jain was a Judge of Rajasthan High Court. He has authored many books and was deeply involved with human rights. He was associated with several NGOs and his active interest in different sphere establishes him as a multi faced personality. His ability enabled him to serve as Chairman Human Right Commission at Himachal Pradesh and thereafter Chairperson of Rajasthan State Human Rights Commission from 2005 to 2010. He is also a religious minded person and was President of Jain Atishaya Khetra from 2011-2014 and at present he is the President of Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan, Jaipur. His life and activities, temperament and sincerity are to be emulated by the younger generation for success in life. I pray to God to give him a long healthy life so that he can pursue all his activities for the welfare of the State of Rajasthan in particular. I also congratulate the organizers who have decided to publish a book in recognition of his services to society at large.

- Justice G.B. Patnaik
Former Chief Justice of India



"The Judges appointed by the king should be well versed in procedure, wise, of good character and temperament; soft in speech, impartial to friend or foe, truthful, learned in law, active, free from anger, greed or desire for personal."

- SHUKAR-NITISARA

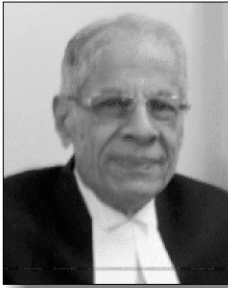


"Trust is it's (Justice) handmaid, freedom is its child, peace is its companio, safety walks in its' steps, victory follows is its' train, it is the brightest emanation from the gospel, it is the attribute of God."

- SYDENY SMITH
(English Writer-Clergyman)

On A Jurist

- R. Krishnamurthy



I am happy to know that Samachar Vichaar Sansthan, Jaipur, in association with Judges and Advocates (Seniors & Juniors) have proposed, to publish a book on our Hon'ble Ex. Chief Justice Mr N.K. Jain who served as Chief Justice of Madras and Karnataka. Rightly, he is a distinguished personality with integrity, honesty and simplicity. He is hailing from the most respectable family, whose father is late Hon'ble Justice

Mr. J. P. Jain, a Judge of Rajasthan High Court. It is superfluous to say that Mr. Justice N.K. Jain was also a Judge in his Home State in High Court of Rajasthan from where he has spread his fragrance to other States in our country, holding exalted positions.

It was a great pleasure to appear before him and I experienced his non-interruption while arguing cases before him, unless inevitably warranted for. Indeed, he has a rare quality to frankly say that if he is not very familiar on a particular branch of law he would openly say so without any hesitation for enlightenment on it without any pretension, and as any Judge or Advocate is not generally expected to be familiar in all branches of Law far-flung in fact. This is the secret of success in his Judicial career to rise him up to hold many high ranking top positions.

I observed him to be courteous to every member of the Bar, particularly the youngsters too being encouraged by him. Never did he hurt anybody, despite being in his exalted positions. He used to maintain balance between time management in court hearings and disposals and thus could score a decent disposal of cases, for which he is well known.

We can never forget this endearing Rajasthani Judge, who has held many positions to his credit. He appears to have written 32 books on Law & Courts for Legal awareness. He is still active and dynamic rendering his yeoman services to human kind by being in several institutions and organizations of repute.

On such a deserving personality, releasing a book is not only a tribute to him but also a guide for the younger and future generations to imbibe the good and humane qualities that the Hon'ble Ex. Chief Justice Mr. Nagendra Kumar Jain has. I wish him the best of luck, PRANAM.

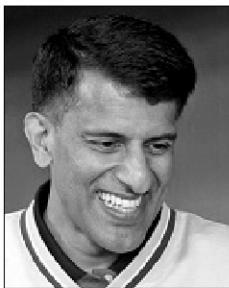
- R. Krishnamurthy

Senior Advocate

Formerly : Advocate General of Tamilnadu

Jusitce Jain as a Good Sportsman

- **Vimal Kumar**



I have known Justice Jain sir since 2001. He was the Chief Justice of Karnataka then Being a former Badminton player himself, he made it a point to make time come and watch tournaments, be it State or All India tournaments in Bangalore.

In fact after the finals he made it a point to describe players the importance of Sportsmanship. He always insisted that Sports is the best medium in life which teaches you to take both defeats and success in your stride graciously. He was very affectionate and was always accessible for us sports people.

I express my sincere gratitude to Justice Jain for his kindness to invite and Honour the members, National Badminton Team. We all always cherish the sweet memories of the hospitability rendered to us by Madam and Justice Jain at their residence at Bangalore.

I take this opportunity to wish him for the continued strength and good things in life with same passion as in the game of Badminton.

- **Vimal Kumar**

Former Indian Badminton Coach



Miss Aparna, Prakash Padukon, President KBA, Vimal
with Aruna at Residence Bengaluru

Justice Jain, A Sportsman Judge

- Justice Dalveer Bhandari



I was delighted to learn that a compilation is being published in honour of Justice Nagendra Kumar Jain, on his life and contribution to the development of Law and Jurisprudence.

I have great pleasure in contributing a small write up about my close association with him. I have vivid memories of spending a few years in the company of Justice Jain in Jodhpur University and then in the legal profession. Even though he was senior to me by a few years, we became good friends. I would like to call him a Sportsman Judge. In the University we played badminton together, he of course was a much better player who had represented the state of Rajasthan in the Nationals on several occasions. Friendship comes to him naturally. Amongst our colleagues, he is one of the most amiable and likeable friends. He was elected as a Member of the Bar Council of Rajasthan in 1971 and remained a member of the Council and later its Chairman till his elevation to the High Court. I have closely watched his progress in the judicial career. He achieved many prestigious positions during his tenure including that of being the Chief Justice of Madras and Karnataka High Court but he always remained the same Nagendra Bhai for us and each tenure in the judicial career he conducted as a sportsperson by playing the game according to the rules with utmost fairness.

Throughout his professional career, he showed utmost respect to his colleagues and absolute warmth and affection to the younger lawyers. This quality along with his passion to do justice makes him an inspiring personality for the future generation.

Justice Jain's long experience at the bar and active involvement in the myriad of activities of the legal fraternity gave him insight into the problems and difficulties faced by litigant public and lawyers. He made all efforts for expeditious disposal of pending cases and demonstrated special interest in the functioning of the Lok Adalats. He was a pioneer in organising Lok Adalats at the Central Jail. After his retirement he continued to serve with distinction and this time as the Chairperson of Rajasthan Human Rights Commission.

It is his unshakeable determination which steered him throughout his career. His determination stems from his unequivocal belief in the value of the Indian Constitution. He always said "be aware of your rights and discharge your duties with utmost devotion." It is this combined act which will lay road for progressive society.

Nagendra bhai has touched life at various points from the sports field to the courtroom and later through championing social causes. He wore multiple hats with equal elan' and in each role, he was the embodiment of equanimity, simplicity and grace

I wish him many more years of good health, peace and happiness in the service of society.

Justice Dalveer Bhandari
Judge, International Court of Justice



Justice Dalveer Bhandari being Honoured by Jain Community Samaj Sarv Shri D.R. Mehta Navratan Kothri, Sumer Singh Bothra, K. Lodha, D.C. Jain and Others Distinguished Persons at Bengaluru (26-9-2004)

सम्पर्क में आए व्यक्तियों से आज भी जुड़े हैं



-न्यायमूर्ति वी.एस. कोकजे

अत्यन्त हर्ष की बात है कि माननीय निवृत्त न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन के जीवन की विशेषताओं पर एक पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। जीवन में ऐसे अनेक सामान्य जन सा दिखने, व्यवहार करने वाले सज्जनों से साक्षात्कार होता है जिनमें असामान्य गुण पाये जाते हैं जो उनकी सफलता का कारण बनते हैं। न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन ऐसे ही व्यक्ति हैं। इनके गुणों को प्रकाशित करने से भावी पीढ़ियों को उचित मार्गदर्शन मिलेगा तथा जीवन में इन गुणों को उतारने की प्रेरणा मिलेगी।

न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन व उनकी दिवंगत पत्नी से मेरा पारिवारिक सम्बन्ध 1994 में मेरा राजस्थान उच्च न्यायालय में स्थानांतरण होने पर प्रारंभ हुआ। उस समय परिवार इस अचानक और हमारी इच्छा के विपरीत हुए स्थानांतरण से दुखी था। ऐसे समय में न्यायमूर्ति और श्रीमती जैन तथा अन्य न्यायाधीशों के परिवारों ने जो अपनत्व दिया और इमें सहज बनाया उसको भुलाया नहीं जा सकता। हम इसके लिये उनके ऋणी रहेंगे।

न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन सरल स्वभाव के अंहकार रहित व्यक्ति हैं। इस कारण वे न्यायमूर्ति तथा मुख्य न्यायाधीश के पदों पर रहते हुए भी कभी समाज से कटे नहीं। समाज से उनके सम्बन्ध पदों पर आधारित कभी नहीं रहे। इसी कारण वे उनके सम्पर्क में आए व्यक्तियों से आजन्म जुड़े रहे। निवृत्ति के बाद भी वे सामाजिक कार्य से जुड़े रहे और श्री महावीरजी ट्रस्ट के भी प्रमुख रहे, जहाँ उन्होंने कई समाजोपयोगी कार्य किये।

मैं न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन के सुख-शांति पूर्ण दीर्घजीवन की कामना करता हूँ। सर्वशक्तिमान परमात्मा उन्हें उनकी हर गतिविधि में सफलता प्रदान करें, यही प्रार्थना।

- न्यायमूर्ति वी.एस. कोकजे

सीनियर ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट

भूतपूर्व राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश व

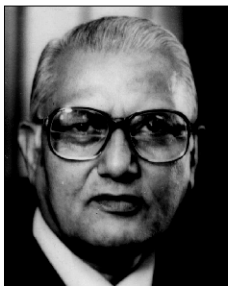
कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति, राजस्थान हाई कोर्ट



शिमला में श्रीमती एवं श्री माननीय राज्यपाल न्यायमूर्ति कोकजे, श्रीमती एवं श्री न्यायमूर्ति रेड्डी, श्रीमती अरुणा के साथ

Shri N.K. Jain - All Rounder

- Justice N. M. Kasliwal



I came in close contact with the family of Shri Nagendra Kumar since his father Late Justice J.P. Jain shifted to Jaipur from Alwar I know him since his student life. He passed law from Jodhpur when I was a part time lecturer in law there besides academics, he has been a National level player in Badminton.

I always found him well disciplined and devoted in his work. He is an all-rounder person taking interest in all walks of life. In his long list of achievements are being member of Bar Council of Rajasthan, member Executive Committee Supreme Court, member Executive Committee National Law School Bangalore, Judge Rajasthan High Court, and Chief Justice Madras High Court and Karnataka High Court He also remained Chairman of Human Rights Commission in Rajasthan and Himachal Pradesh He was also President of Mahaveer Digambar Jain Atishaya Kshetra Shree Mahaveer ji for three years.

With his qualities of workmanship with humility and amicable nature, he is able to make friends with all strata of society. He has proved to be a worthy son of a worthy father

I extend my best wishes for his present and all future endeavours.

Justice N. M. Kasliwal

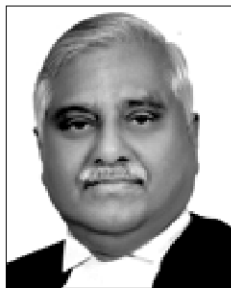
Former Judge
Supreme Court of India



Justice N.M. Kasliwal, Prof. Bhattacharya in a Workshop
at Jaipur & in Shimla with Family

Justice Jain Demonstrated Exemplary Leadership Qualities

-Justice V.Gopala Gowda



Justice Nagendra Kumar Jain has not only distinguished himself as a legal luminary but also as a wonderful human being emanating kindness and compassion to all around him.

During the course of his illustrious career, he has served in various stellar capacities. His father was a judge of the High Court of Rajasthan and thus hailing from such an illustrious family, he has an expansive knowledge of the law. As the erstwhile Chief Justice of the High Court of Karnataka he has always conducted himself in a fair and impartial manner as a custodian of justice in words and in actions. He has also held various other positions of immense responsibility even post-retirement and was always known to have discharged them with utmost integrity.

He has demonstrated exemplary leadership qualities as he always consulted all his colleagues and gave due regard to their opinions and suggestions to reach the consensus in taking tough decisions. He treated everyone with warmth and respect irrespective of seniority or status. His humility is worthy of appreciation. Justice Jain is gifted with common sense and the rare ability of quick decision making even in tough circumstances.

Justice Jain is also an agile sportsman who takes immense interest in the sport of Badminton. His commitment to a sound body, mind and soul is an inspiration to the younger generation to lead a balanced life of simplicity and moderation. He is a very pious man. During his visit to the Mahamastakabhisheka in Shravanbelagola, he spent an entire day partaking in the religious ceremonies at the Gomateshwara Temple.

I am elated to know that Samachar Vichar Sanstan, Jaipur has taken up the initiative to publish glimpses of the personality of Shri Justice N.K. Jain so that the upcoming generations may indeed take inspiration from the same.

I wish Justice N.K. Jain the robust health to power his yeoman service to our society.

Best Wishes

Justice V. Gopala Gowda
Former Judge, Supreme Court of India

Jain Sahib's Wonderful Achievements

- Justice Ajit J. Gunjal



I know Justice N.K.Jain since 2002. I had the privilege of appearing before him as an advocate. I find him sharp with good understanding and grasping. He was sharp and reached to the controversy in no time. I along with 3 other brother judges were appointed by him. I have the privilege of sitting with him on the bench as a companion judge. He always encouraged the companion Judge to work with ease and without

tension.

Justice N.K.Jain is a multifaceted personality. An eminent judge, outstanding sportsman, he brought about Human Rights awareness drive in Rajasthan. He played a pivotal role in bringing reforms in judiciary. He was Chairman of Bar Council of Rajasthan. He also became a Member of Bar Council of India and Member of Executive and Governing Council of National Law School in 1986. His spirit of sportsmanship was evident throughout his illustrious career as Judge. He used to deal with cases with great aplomb and was well known for disposing of a record number of cases as Chief Justice of Madras and Karnataka. He dwelled deeply into the philosophy of Article 51(A) of the Constitution. He was also a motivational speaker and motivated the society at large to discharge their duties properly. With this motto he has visited many institutions i.e. more than 100, educational, N.G.O. and various other departments.

Coming to his sports capabilities, he represented state of Rajasthan in Badminton for 14 years. Justice N.K. Jain is an illustrious son of an illustrious father. In the evening of his life he lost his better half Smt. Aruna Jain who was his strength. Justice Jain is a simple and practical person. He never hurt a soul. He has exemplary qualities. People of his tribe are hard to come. Let his tribe grow.

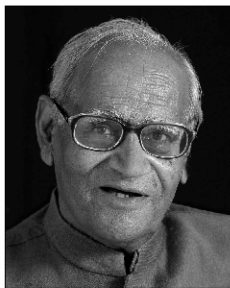
We wish him good health and prosperity. Let Lord Mahavir shower his blessings on him.

- Justice Ajit J. Gunjal



Challenges are what make life interesting and overcoming them is what makes life meaningful.

एक मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक



—प्रवीणचन्द्र झाबडा

जिन्हें हम दूर से जानते हैं, अखबारों, पुस्तकों या दन्त कथाओं से उन पर कुछ कहने लिखने में संकोच नहीं होता। कुछ शोध, कुछ क्षम और कुछ कल्पनाशीलता व धारणाओं से कुछ हानिरहित संशोधन के सहारे किसी महापुरुष पर लेख ही नहीं जीवनी भी लिख देते हैं। उन पर यदा-कदा अपनी दृष्टि चिन्तन व मन्थन भी व्यक्त किये देते हैं। पर, जैसा कि मेरे साथ एन.के. जैन को लिखने का प्रसंग आया मैं तय नहीं कर सका कि मुझे कौनसा बिन्दु पकड़ना चाहिये, क्योंकि मैं जितना जानता हूँ व कुछ-कुछ ही जानना जैसा है और वह नहीं भी है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से मेरा सीधा सरोकार नहीं रहा। जैन मेरे अनुज चि. कैलाश के सहपाठी रहे हैं। इनका परिवार न्यू कालोनी में मेरे पड़ोस में रहा है। इससे मुझे उनको अन्तरंग से जानना ही चाहिये।

हमारे परिवार में अनुज और उनके साथियों के साथ आत्मीयता तो होती है, उनके प्रति स्नेहभाव भी रहता है। पर उनके व्यवहार और विचारों से अवगत हो पाना संभव नहीं है। जैन के साथ भी मेरा अपनापन होकर भी मात्र स्नेहभाव रहा क्योंकि मेरी अपनी व्यस्तता ने उनके निकट होने का अवसर नहीं दिया। मैं यह जानता रहा कि जैन अच्छा खिलाड़ी है और इनका पसंदीदा खेल बेडमिन्टन है, जिसमें महारथ हासिल की है। इस खेल में जरूरी है कि खिलाड़ी की दृष्टि चिड़िया पर बनी रहे। उसकी जागरूकता ही खेलने को बेहतर बनाती है। जैन में यह कुशलता रही कि चिड़िया की दिशा की ओर ऐसी दृष्टि बनाये रखना, ताकि चिड़िया को उनके बेट पर आना ही होगा और फिर उन्हें शॉट लगा देना है। जिन्दगी में आगे बढ़ने में ऐसे खेल दिशा निर्धारित कर देते हैं। जैन के वर्तमान के साथ भावी जीवन के निर्माण में बेडमिन्टन भी कारण रहा। जैन ने खेल में बेडमिन्टन को चुना, जिन्दगी में भी कुछ चुनना ही था और इन्होंने अपनी विरासत को आगे बढ़ाकर अपनी कुशलता बताने का फैसला लिया। वह एडवोकेट बने और निश्चय के साथ वकालात में ऐसा अवसर बनाया कि अपने स्व. नामधन्य पिताश्री जे. पी. जैन के योग्य उत्तराधिकारी बने। पिताजी अपने समय के ख्याति प्राप्त एडवोकेट रहे और सफलता की छाप छोड़ते रहे कि एक समय आया जब वे न्यायाधीश बने। हर विवेकशील व्यक्ति अपने परम रुचिकर उद्देश्य को पाने के लिए अग्रसर होने से पूर्व अपनी बाजुओं की क्षमता को तोल लेना चाहता है। एक बार उस पथ पर चलना हो जाता है तो परम एकनिष्ठ को भी लोभ लालच को तजते हुए आत्म लोचन द्वारा अपने दोषों को दूर करते हुए सतत प्रयास करना होता है, झटके लगते हैं पर उनके प्रति बेफिक्र होकर अपनी मंजिल के लिए आगे बढ़ जाता है। अपने लिए तय की गई मंजिल को छूकर सफलता के शिखर पर पहुँच जाता है।

अपनी वंश परम्परा, सामाजिक परिवेश से प्राप्त संस्कारों के जो बीज मन मानस पर अंकुरित हुए, उससे जो दृष्टिवाद हुआ उससे जैन को अपने लिए जीवन प्रवेश का आधार तैयार हुआ प्राप्त हो गया। उन्होंने पिताश्री की विरासत वकालात को अपना लिया। उन्हें योग्य प्रशिक्षण के साथ कानून व सन्दर्भों की सुनियोजित लाइब्रेरी मिल गयी। वकालात में सफल होते गये और वह दिन आया जब वे स्वयंभू

न्यायाधीश पद पर आसीन हुए। उन्होंने पिताश्री की वसीयत को संभाल लिया और उसे संजोकर रखा। वे देश के दक्षिणी भाग के दो बड़े प्रदेशों तमिलनाडु व कर्नाटक के मुख्य न्यायाधीश पद से अलंकृत हुए। यह भी संयोग है कि पिताश्री जे.पी. जैन जैन जगत के सबसे अधिक अतिशयकारी श्री महावीरजी के न्यासी रहे, इस क्षेत्र के लिए एन के जैन भी न्यासी मनोनीत हुए और समय आने पर क्षेत्र कमेट्री के अध्यक्ष चुन लिए गये। यह ऐसी उपलब्धि रही जिस पर किसी को भी गर्व हो सकता है और गौरव का एहसास हो सकता है। इतना ही नहीं जब मैंने चूलगिरी तीर्थ के संरक्षक के नाते एन. के. जैन से कमेट्री का सदस्य बनने की स्वीकृति चाही तो उन्होंने सहज रूप से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि 'समयाभाव के कारण कमेट्री में पद लेना मेरे लिए उचित नहीं है।' उनके इस वाक्य ने मुझे एक बार के लिए विचलित किया, किन्तु साथ ही उनके प्रति अपने स्नेह को और प्रगाढ़ कर दिया, क्योंकि पद के लालच का लेशमात्र अंश भी जैन में नहीं है। साथ ही उनकी स्पष्टवादिता प्रभावशाली है।

मानवीय संवेदनाओं के प्रति भी एन.के.जैन सही अर्थों में कर्मयोगी है। वह जिस बात पर विश्वास करते हैं उसे करना भी जानते हैं। उनका मानवाधिकार का मिशन किसी प्रदेश की सीमाओं में बंधा नहीं है। अपनी मान्यता को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रचार-प्रसार के माध्यम में जाने से कहीं संकोच नहीं रहा। अति की सीमा तक संवेदनशीलता जागरूकता किए रहती है। जैन निराशावादी नहीं है उन्हें भरोसा है कि लोग अपने अधिकारों को समझेंगे और तदनुसार दायित्व का भान भी स्वतः होने लगेगा। जीवन की अच्छाइयों के प्रति आस्था और विश्वास ही उन्हें मानवाधिकार के अभियान के प्रति समर्पित बनाए हुए है वे इसे पूजा मानते हैं और इसके लिए अध्यलिरहते हैं।

मेरे निकट एन.के. जैन अनुज तुल्य होने से अधिक मेरे आत्मज है। यह हर तरह से प्यार और दुलार के पात्र हैं। इनका सम्मान भाव इतना गहरा है कि छोटापन आने नहीं देता इसलिए मेरे जैसे वरिष्ठ का आशीर्वाद अपने साथ लिए रहते हैं।

प्रवीणचन्द्र छाबड़ा

वरिष्ठ पत्रकार

संरक्षक, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी, जयपुर



श्री प्रवीण जी एवं श्री पी.सी. सेठी के साथ

महावीर स्कूल में आयोजित सम्मान समारोह में सर्वश्री राजेन्द्र के. गोधा, महेन्द्र पाटनी, प्रवीण जी एन.के. सेठी के साथ

Like Father, Like son

-Gopi Krishana Siddha “Pragya”



I feel immense pleasure to express a few words about Shri Nagendra Jain. Being the resident of the same New-Colony in the year 1952-57 and being in the field of Education. I was well familiar with Justice J.P.Jain and his entire family.

Shri Nagendra Jain was a very sharp and genius student and a Promising sports Player. In the school period his all-round achievement in academic and sports activities was the talk of Jaipur city. Like father like son.

Being the most worthy beloved son of Justice J.P. Jain, he proved to be a boon to the family in all round capacity and in the field of Judiciary.

Shri Nagendra honoured the graceful chair of chief Justice Madras and Karnataka High Court, He also honoured the chair of Manvadhikar Ayog Himachal Pradesh and Rajasthan.

I found him simple, soft spoken, pious and a disciplined person with strong conviction.

Justice Jain was universally loved respected & admired because of his sterling quality of integrity and impartiality. He was equally respected by his colleague lawyers and litigants.

I see no words to speak high about his wonderful success in short Span of time. Due to his deep faith in Bhagwan Mahaveer, his dead honesty, sincerity, discipline, discrimination and firm determination carried him to the highest position in the Country.

Chief Justice Nagendra Jain & his work as Chairman Human Rights Commission will be long remembered not only in Judiciary for Justice, but also in public at large.

I pray for Justice Jain for good health with long life. Lord Mahaveera may shower his blessings on him, family members and also on those well wishers who are doing this noble Job.

-Gopi Krishana Siddha “Pragya”

“अणुव्रतसेवी”

Secretary, Jaipur Public School, Jaipur

My Lord's Keen Sense of Observation

- Justice Ram Mohan Reddy



When I first saw Hon'ble Justice N K Jain at the swearing in ceremony, on transfer to The High Court Of Karnataka, in my perception he appeared as a simple, graceful and an unassuming person. The hall mark of being a successful Chief Justice was his abundant common sense, quick grasp of the subject matter, alertness in mind, and rendering speedy justice. Having appeared before My Lord Chief Justice as a lawyer and get the privilege of being on the bench as a companion Judge, it is but fair to conclude that he was having honesty, integrity and character personified, with a keen sense of Justice coupled with knowledge of laws ensuring fair play.

During My Lord's tenure, while heading the collegium consisting of very distinguished Judges, he recommended many a-name for elevation as Judges from the bar of whom I was one. His keen sense of observation with a sharp intellect ensured strict administration of justice.

My Lord's physical fitness was attributed to being an athlete in school and college and thereafter a Badminton player. His Lordship was embodiment of grace, gratitude, kindness, and with the request for forgiveness through letter every year, true to the traditions of religious practice of Jainism. The evergreen memories of several a- lunch and dinner with Rajasthani cuisine reflects love and affection bestowed upon Judges both by My Lord and the graceful Madam. He was a true Chief Justice with simplicity, decorum and large heartedness touching the lives of many a person.

Justice Ram Mohan Reddy

Former Judge, Madras High Court
Member, Krishna Godavari Tribunal



**" If You Believe in Yourself
Anything is Possible "**

A Visionary of Social Justice

-Professor (Dr.) V.K. Agrawal



Mr. Justice Nagendra Kumar Jain, (Former Chief Justice Madras & Karnataka High Court) a man of value and immense dedication, has not only created history in the field of law but is also an avid promoter of human rights. Justice Jain has created awareness of Human Rights and Duties through Booklets, PPT Projects and CDs. He has written about 32 booklets on various legal and other issues like : Women's Rights, Dalit's Rights, Children's Rights, Arrest, HIV/ AIDS & Government Welfare Schemes, etc. He also motivated the law students of different Universities and Colleges during their internship in Rajasthan State Human Rights Commission (RSHRC), to prepare PPT programmes on various issues like Women, Children, Arrest, Dalits, HIV/AIDS, Cancer, Environment, Juvenile Justice, Ragging, Feticide, Slum Areas, Right to Justice, Right to Information, Custodial Violence in Jail, Drug Abuse, etc. He worked on the project 'Duties mentioned in Article 51-A' and sensitized the students of various universities and colleges. The booklets authored by Justice Jain are available in libraries of U N Congress and various schools, colleges, universities and Government Departments. These booklets have been adopted for wider circulation and distribution (more than ninety thousand) free of cost by Legal Aid Committees. The legal literature offered by him on various contemporary issues of law has been very well received and appreciated by all concerned.

Awareness about Duties as Article 51-A: In a democratic country while a person makes use of his rights, he is equally responsible to his duties. But more often than not we Indians cling tightly to our rights and tend to forget our duties towards our Nation. It is then the people like Justice Jain come forward to remind of our duties along with informing us about our undiscovered rights. Justice Jain greatly motivated the students and the public at large to discharge their duties as mentioned in Article 51-A of the Constitution of India. Keeping in mind that "Duties of one is rights of another", and if one discharges his duties properly, the violation of human rights of others will automatically minimize. More than 100 Institutions, Schools, Colleges, Universities, NGOs, Government Departments, Societies, Clubs, etc. have joined hands in this noble mission and created awareness by reciting pledge of Article 51-A. They have also printed slogans, calendars, pamphlets, banners, flex boards etc. and distributed in public with their

concerned activities and programmes. Even in more than 10 Jails in Rajasthan, 7000 inmates have taken oath with the help of the respective NGOs to the mission. In about 180 meetings and visits of Justice Jain, a number of students and employees of various organizations are observing and taking pledge as per Article 51-A. The effective Human Rights education and discharge of duties properly can change the mind set in values, and behaviour, it can also develop knowledge and skill with attitude of brotherhood.

Elevation to High Court: As High Court Judge on 20-7-1990 and as Chief Justice of Madras and Karnataka High Court (for 5 years). Justice Jain discharged his Constitutional duties with sincerity and dignity having full faith in rule of law. Justice Jain remained Chairperson of Himachal Pradesh Human Rights Commission at Shimla for 9 months with additional charge of Lokayukta before taking charge as Chairperson RSHRC and completed 5 years on 15.7.2010. He has been a member of Executive Council and Academic Council of the National Law University, Bangalore. He is a well travelled person having visited USA, UK, Europe, Canada, Columbo and many other countries of the world. Justice Jain has attended more than 500 conferences, seminars and workshops at the National and International level.

Multifaceted Personality: Justice Nagendra Kumar Jain being an all round sportsman of early years, is instrumental in developing the Sportsman spirit in the players, organizers and colleagues, so as to prove a worthy citizen. As a lawyer, he made a significant contribution in maintaining peaceful and cordial relations between Bar & Bench. He was a strong supporter of justice for poor and downtrodden, legal literacy and awareness, etc.

Social Service: As President, Digamber Jain Atishaya Kshetra, Shri Mahaveerji, Karauli, between Feb. 2011 to Feb. 2014, and also as President of Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan, Jaipur. Justice Jain has tried his best to motivate one and all to join hands together with full dedication and determination for Human rights and to discharge duties sincerely with respect, humbleness and in a dignified manner. Justice Jain has given a slogan “Be aware of your rights and discharge duties with devotion” and this slogan is popular among the people at large these days. The vision and initiation with boldness to implement them as apparent are rare good qualities in him. Justice Jain is trying to achieve the motto to ‘serve the mankind’ and his achievements are beyond excellence.

-Professor (Dr.) V.K. Agrawal

Pro Chancellor, Jagannath University, Jaipur.

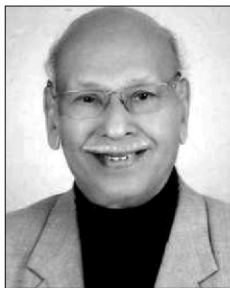
Formerly Dean, Faculty of Law:

Dean Academic Affairs: Director

Institute of Law and Registrar, Kurukshetra University.

मिलनसार व्यक्ति के रूप में है पहचान

- दीनबंधु चौधरी



किसी राज्य का चीफ जस्टिस होना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है और वो भी मद्रास का होना, जिसका अब वर्तमान नाम 'चेन्नई' है और जिसके फैसले लॉ बुक्स के अंदर Quote किए जाते हैं यानी उन फैसलों को हर जगह एहमियत दी जाती है। ऐसी जगह के चीफ जस्टिस श्री एन.के. जैन रहे हों तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि क्या वे साधारण व्यक्ति हैं? नहीं, वे असाधारण व्यक्ति हैं, लेकिन जिन लोगों की उनसे मुलाकात रही है या है, वो उन्हें अच्छी तरह जानते हैं कि वे अत्यन्त साधारण व्यक्ति हैं। अंग्रेजी में कहते हैं "Down to earth"

इनका वाक्या में आपको बता रहा हूँ कि मेरे अजमेर के एक मित्र श्री डी.एल. त्रिपाठी का मद्रास जाने का मौका पड़ा तो मैंने उनसे निवेदन किया कि वे मेरे मित्र जस्टिस एन.के. जैन साहब से मिलें। वे बहुत बड़े औहदे पर हैं, जब वे मेरी चिट्ठी लेकर उनसे मिले तो कोर्ट ऑवर्स के बाद श्री जैन उनसे बड़ी आत्मीयता के साथ मिले। श्री त्रिपाठी खुद आश्चर्यचकित रह गए कि मेरे जैसे व्यक्ति की भी उन्होंने तारीफ की। अब आप ऐसे व्यक्तित्व को क्या कहेंगे, मैं फैसला आप पर छोड़ता हूँ। जस्टिस एन.के. जैन को मुझे 'जस्टिस एन.के. जैन' लिखना बड़ा अटपटा लग रहा है। आप क्षमा करें अगर मैं उनको 'एन.के. ही' लिखूँ तथा वो भी क्षमा करेंगे। क्योंकि एन.के. कहने में मुझे अपनापन लगता है।

मेरी मुलाकात उनसे सन् 1954 में किसी बैडमिंटन मैच के दौरान हुई थी। एन.के. बैडमिंटन के बहुत अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। मैंने उन्हें खेलते हुए देखा तो प्रभावित हुआ। मैं भी उन दिनों राजस्थान का बहुत अच्छा खिलाड़ी माना जाता था। मैंने उनके साथ सन् 1955 में राजस्थान की तरफ से नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता में जयपुर से भाग लिया। उनमें खासियत यह थी कि वो 'राइट हैंड' से सर्विस करते और 'लैफ्ट हैंड' से खेलते थे। सामने वाला खिलाड़ी (Opponent) यह समझकर कि राइट हैंडर हैं, उनके लैफ्ट पर अटैक करता और वो उसे तेजी के साथ रिटर्न करते थे यानी शॉट मारते और फौरन पाइंट बन जाता था। 5-7 पाइंट खेलने के बाद Opponent को पता लगता कि ये तो Deceptive खिलाड़ी हैं। खैर, अपनी-अपनी कला में हर आदमी माहिर होता है।

जब भी कोई बैडमिंटन का टूर्नामेंट होता है तो उस खेल का ड्रा निकाला जाता है। उसमें दो भाग होते हैं, जिसे राउण्ड कहते हैं। दोनों राउण्ड के अंत में जो जीतते हैं, वे फाइनल में टकराते हैं। आपको बता दूँ कि सारे अच्छे खिलाड़ी (मुझे भी मिलाकर) प्रार्थना करते थे कि एन.के. के राउण्ड में नहीं पड़ें। क्योंकि इनके साथ यह प्रसिद्ध था कि इनके राउण्ड में अच्छे खिलाड़ी, चाहे कोई नंबर वन हो, अगर पड़ गया तो वो फाइनल में जीत ही नहीं सका। पता नहीं यह जादू था या करिश्मा, भगवान की कृपा रही कि मैं इनके राउण्ड में कभी नहीं पड़ा।

एन.के. राइट हैंड से सर्विस करने के बाद पूरा मैच लैफ्ट से ही खेलते थे, पर लोगों को लगता था कि राइट हैंड से भी खेलते हैं। डबल्स में यह खूबी भी उभर कर सामने आई। पाइन्ट Create करने में

बहुत होशियार थे, जिससे कि साथी खिलाड़ी रिटर्न आने पर उस पर स्मैश कर पाइन्ट आसानी से बना लेता था व डिफेन्स भी बहुत ही अच्छा था तथा बखूबी रिटर्न करने में महारथ हासिल थी।

लैफ्ट हैंड साइड (जो खिलाड़ी की कमजोर साइड कही जाती है) उसको वो बखूबी कवर करते थे और डबल्स में इनकी जोड़ी को जीतना लगभग असंभव था। हालांकि मेरे जोड़ीदार श्री राज भार्गव भी स्टेट चैम्पियन थे। वो भी मेरे साथ डबल्स में सन् 1955 के नेशनल्स में जयपुर में खेले। हमारी जोड़ी केवल एक बार एन.के. व एल.सी.गुप्ता की जोड़ी से सन् 1958 में हारी थी। यह वाकया जोधपुर का है। हमारी जोड़ी इसलिए हारी थी कि हम छीतर पैलेस के गुम्बज पर चढ़े थे और पांच थक गए थे। हालांकि मेरे पार्टनर राज भार्गव ने गुम्बज पर चढ़ने से मना किया लेकिन मैं नहीं माना और परिणाम हार का रहा।

जोधपुर में जज के पद पर कार्यरत रहने के दौरान एन.के. ने हमारे अजमेर क्लब में नये बैडमिंटन कोर्ट का बतौर अलका काला IAS के पार्टनर व मेरे और राज भार्गव के खिलाफ खेलकर उद्घाटन किया। इसमें रेवेन्यू बोर्ड के सदस्य श्री राजेन्द्र सक्सेना का सान्निध्य रहा।

जब वो जज थे, तो जोधपुर में बहुत ही मिलनसार व्यक्तित्व के रूप में पहचान रही व आज भी है। 'चीफ जस्टिस ऑफ मद्रास' से ट्रांसफर होने के बाद कर्नाटक हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रहे। आपके स्वभाव में वो ही अपनापन, वो ही विश्वास आज भी है। इनके बारे में जितना लिखा जाए कम है। लेकिन जो लम्हे मैंने इनके साथ गुजारे उनको याद करता हूं तो यही इच्छा होती है कि काश, वो दिन वापस आ जाएं। लेकिन मुझे खुशी है कि आज भी मेरे प्रति वही अपनापन व स्नेह बना हुआ है।

इनका जीवन सफलतम रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

दीनबंधु चौधरी

मैनेजिंग डायरेक्टर, दैनिक नवज्योति

राजस्थान टीम : एन.के. जैन, जूनियर प्लेयर्स जी.के. शर्मा,
कल्याण सिंह, ज्योति, वी.के. वैद, राज भार्गव, सुधाकर, योगेश शिमला में (1964)



Action Speaks Louder Than Words

-Justice V.S. Dave



Brother Justice Nagendra Kumar Jain, Former Chief Justice of Tamilnadu and Karnataka, is one of the rare person, I have seen in my fraternity who fully justifies the phrase "Action Speaks Louder Than Words." Sobar, silent, studios brother Justice Nagendra is known to me ever since 1963, when I had set up my independent office at Plot No. 109, Polo Ground No. 1 in Jodhpur which was close to Ship

House and Late Justice J.P. Jain Sahib Nagendra's father was then a practising lawyer having his residence and office close to this place. I had hired Plot No. 110 also as my residence and family also shifted in Polo ground in 1968. Thus we developed family relations. I have already recollected the great qualities of late Justice J.P. Jain Sahib, Ammaji and late Smt. Aruna Ji, wife of brother Justice N.K. Jain in the books which he brought out in their loving memories. Publication of these two books, demonstrate in abundance, his great bondage and concern for the family. Nagendra Babu was a great sports person as a student and was state champion in Badminton. His interest continued in the games till late in life rather even after he had become a judge and then Chief Justice. With the back ground of sports, he had the sportsman's spirit and knew how to coordinate, co-operate with colleagues both at the Bar and the Bench and that was one reason he had achieved whatever he deserved and desired.

NagendraBabu had to shoulder the responsibilities of the family at a considerable young age, being the eldest child of the family. He was again my neighbour in Zalim Nivas colony. We had a common wall since my self and late Justice J.P. Jain Sb had purchased the plots on the same day in auction from UIT Jodhpur, on which Nagendra constructed his residence. On the other side of my plot there was a vacant plot meant for children's park and I got a gate opened in my own compound and developed it so that all the children of Nagendra Babu, Gaurav and Garima grew up with my children and almost the same age group were the children of late Sh. Harish Rastogi, Late Sh. S.R. Bajwa, Justice N.M. Kasliwal, Sh. Sagarmal Mehta etc. Thus, not only we the elder generation but the younger generation had also close affinity and lived like a family. The period spent at Zalim Vilas Colony was the golden period for not only me but for all other colleagues too.

Sh. Nagendra was my colleague in Bar Council of Rajasthan, Succeeded me at Bar Council of India and again became my colleague on the bench. His respect and regard for me can easily be, made out from the fact that after he took over as Chief Justice of Tamilnadu and visited Jaipur alongwith Smt. Aruna, he called on me and honoured me but putting round my neck a full length Golden Mala made of Gota Kinari, like the one, which Tirupati Balaji wears.

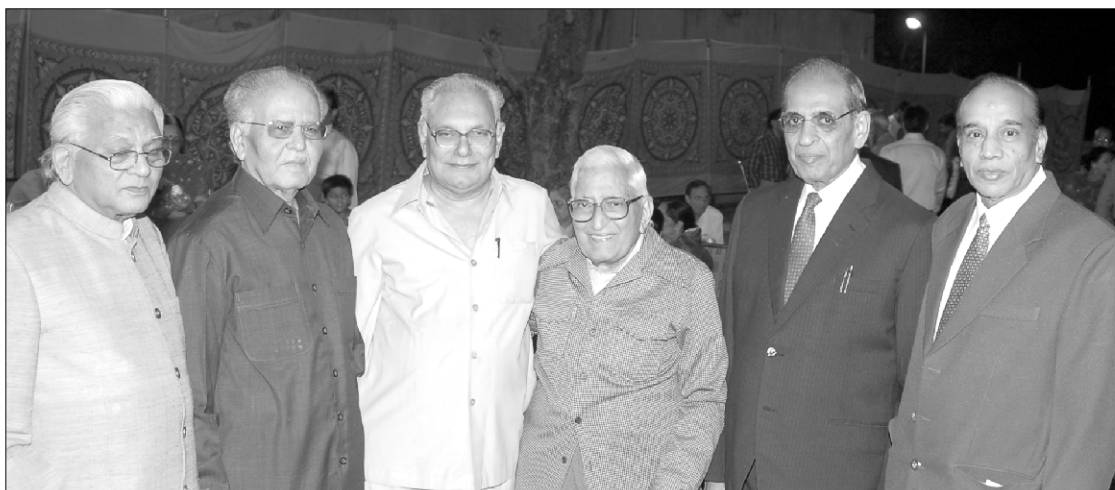
His this gesture is one of my great proud and privilege moment and constantly reminds me of his respect and love for me. Whenever I look at this Mala, which is well preserved , also it reminds me of the sweet memories of our visit to Tirupati Balaji in 1980 when my wife Kanti and Smt. Aruna was also with us. We had gone in connection with a national Seminar at Bangalore.

He has religious bent of mind in as much as he Chaired Bhagwan Mahaveerji Trust. He has also made great contributions for the welfare of Jain community and in general too. He is also a philanthropist and has given a large donation to Mahaveer Viklang Society distributing artificial limbs. As Chairperson of Human Rights Commission, he served the people with great commitment to the poor and the needy. He also inspired school children to discharge fundamental duties.

I wish him all the best for his future life.

Justice Vinod Shankar Dave

Former Judge Rajasthan High Court
Former Chairman Rajasthan Law Commission
Former Acting Lokayukt



With Shri H.P. Gupta, Justice S.N. Bhargava, Justice Anshuman Singh Governor
Justice V.S. Dave, Justice S.C. Agarwal of Supreme Court at Bhattarak Ji Ki Nasiyan, Jaipur

A Unique Multifaceted Personality

- Justice N.L. Tibrewal



I am glad to know that Samchar Vichar Sansthan, Jaipur has decided to publish glimpses of the life of Justice Nagendra Kumar Jain, in association with his friends and relatives and I have been asked to contribute some memoirs of his personality.

I had a long association with Mr. Jain spreading in five decades or so. If I am asked, in a few words, the secret of success of Justice Jain, my answer would be in a few words, 'his humbleness and ever-smiling face'. Basically and by his habits Mr. Jain is a sports man and his sporting-spirit is reflected in his behaviour throughout. In his early days when he came in legal practice, he had little interest perhaps due to his leaning towards sports. The untimely death of his father Justice J.P. Jain made him serious towards legal practice in addition to his family responsibility.

His father Justice J.P. Jain was a bold and straight-forward Judge. He was always witty and humorous.

Like his father, Shri Nagendra Jain also maintained good relations with all who came in his contact. As a member of Bar Council of Rajasthan, his contributions in various fields shall always be remembered. He was elevated as a Judge of Rajasthan High Court in 1990. He remained Chief Justice of Madras High Court and Karnataka High Court for more than 5 years. Thereafter; he remained Chairperson, Human Right Commission at Himachal Pradesh with additional charge of Lokayukta and Chairperson, Rajasthan Human Right Commission from 16.07.2005 to 15.07.2016. Justice Jain has a distinguished career to inspire young generation. Even after his retirement, he is purposefully associated with social and educational institutions benefiting the society by his long experience in various fields.

In a nut shell, he is a unique multifaceted personality and as such, any number of words would fall short to write about him.

May Almighty bless Justice Nagendra and other family members for a long life with good health and happiness.

Justice N.L. Tibrewal

Former Acting Chief Justice & Governor of Rajasthan

Justice N.K. Jain Good by Nature

- Ravi Kiran Mathur



Justice N.K. Jain is a wonderful person, He always remains calm and happy. He is helpful to every one. I met him when he came to Alwar, his native place in the office of my father Sh. Gopal Sharan Mathur for seeking support for Bar Council Election in 1979. That time my father called some senior advocates like Sh. B.L. Mahavar, Jay Narayan ji Gupta, Sh. Virendra Swaroop Bhargava, Sh. Jagdish Prasad and others for their help in Bar Council Election. I was impressed by his fairness in seeking support for giving any preference in election. He was re-elected and continued to remain member till his elevation as a judge on 20th July 1990. He has done his best as Bar Counsellor for upliftment not only for the lawyers' community but also to the members of the society.

I shifted to Jaipur in the Year 1981, he was kind enough to extend his help, support and cooperation in settling me as an advocate at Jaipur.

I appeared before him. I found him a fair, reasonable, balanced and practical Judge, there was no discrimination between senior and junior lawyers in his court, and instead of adjournment new comers were given a chance to prepare the case and there after argue on next day. He was always cheerful in the court and environment was tension free.

Later I became member of Bar Council of India and also managing trustee Bar Council Trust. During that period I was happy to note that chairman Mr. Subba Rao and other members who were with him at that time praised him for his contribution for lawyers community as a member Bar Council of India. They also have high regard for his contribution in establishing National Law School at Bangalore.

I had an occasion to see him at Bangalore while he was Chief Justice of Karnataka High Court. He met us with the same affection in pleasing manner. I will always cherish the moment in my life. The legal fraternity of Rajasthan will always remember and admire his contribution and I pray to almighty for his good health, happiness and prosperity.

-Ravi Kiran Mathur
Senior Advocate

Several Milestone Steps by Justice Jain

- Jinesh Jain



Justice Nagendra Kumar Jain is a multifaceted personality, an eminent judicial stature renowned as convener of legal literacy. Human Rights and its awareness programs ever since he became the Chairman, Bar Council of Rajasthan. He was also invited to discuss the reforms in the judiciary by Parliamentary Estimate Committee in the year 1985-86. His becoming Member Bar Council of India and Member, Executive and Governing Council of National Law School of India University, Bangalore in 1986 further strengthened his vision of working in the field of legal literacy and awareness. His true sportsmanship spirit is clearly reflected throughout his career as he is also known for setting up several milestones by disposing a record number of court cases during his administration by technically upgrading the traditional infrastructure. He is also known for his efforts to propagate Article-51(A) of the Constitution of India and motivate everyone to discharge his duties as “Rights & Duties” are correlated.

I know Justice N.K. Jain for the last more than 45 years when he was an advocate. I saw him arguing in court and working as secretary of Rajasthan High Court Bar Association, Bar Federation, Member Bar Council of Rajasthan, Bar Council of India and National Law School. I along with some young advocates associated him in some functions in different capacities organized by him at Jaipur / Jodhpur and learned a lot at that time. His quality to uplift deserving persons and to help needy persons is helpful and useful for happy living in our life.

He has done substantial work for legal fraternity. A person full of courage and remaining cool, and calm at the time of struggle and odd situation, he has capability to make solutions and patch up issues in different situations. After retirement from Karnataka High Court as Chief Justice he worked as Chairman Human Rights and propagated the legal awareness to common man and fulfilment of the duties as enshrined in Article 51A of the constitution. He helped entire citizens to discharge their duties properly.

In his Chairmanship the endeavour of the commission was to do its best to protect the Human Rights of every person in general and particularly among the vulnerable sections of the society with the help and cooperation of all concerned in the state. He is fully devoted for our duties and rights.

In every sphere all type of persons like players particularly in Badminton, Students, Law Students, Young Advocates, Judicial Officers, persons from respective Departments, Judges and Public at large have been inspired and motivated by his conduct and human qualities and the services rendered by him to the society. To my mind all these services have been done as God wanted to get the things done through him. God is so kind to him.

In this way, he is an inspiring person in every field for many and his devotion will be a source of inspiration and will be remembered for years to come. Justice Jain with his positive thought and action oriented belief has proved to be a good human being.

Jinesh Jain

Advocate

Former Additional Government Advocate



Dr. S. Nagarajan

It is not new lamps for old, as in Alladin's tale. It if our own Justice Jain who is now our chief Justice, our nineteenth Chief Justice after our country become Indian Union or Republic.

From the day he came in our midst, on transfer from his own Rajasthan High Court to which he had been elevated both on his own merits and also on account of its being his पितृद्रव्यम् (Mitakshara) – his late father had himself judge of Rajasthan High Court, Mr. Justice Jain endeared himself to one and all the members of our fraternity. We are reminded of the immortal phrase of the कवितार्किक केसरी the पैतामहम् घनम्..

Motivated me for Healthy and Sporty Attitude

- **Sunil Tholia**



It is my pleasure to express my experiences and memories spent together with Nagendra Bhai Sahib and his family for more than four decades as we became their neighbour during 1963 – 64 at Tilak Marg, C – Scheme, Jaipur. We came to know Respected Late Shri Jagdish prasadji, his father was an aroma of truth and dignity in himself.

Being neighbours, we had friendly and family relations with Nagendra Bhai Sahib and his family. He initiated many good habits in my life because of his sportsman spirit. Being badminton champion, he used to go for jogging and exercises and with it he motivated me for healthy and sporty attitude in my personal life and I took lessons in swimming which later on moved me to the national tournaments representing my college, city and the state a few times.

In 1980's, I immigrated to Newyork, USA; and during some time in the year 1984, my mother told me of Nagendra Bhair's sudden arrival and the next day I received a call from him from JFK airport that he needed the directions to come to us in Elmhurst, Queens, Newyork. And with utmost surprise, he told Bhabhi that he had come to New York from Bombay. For a few days he roamed in New York and saw many things, sometimes, just following the rules of mass transit and sometimes we went together. After just three days, while talking to Suman Sharma in Canada, his another neighbour, he made his plans to visit them because she was going to Jaipur after three days. During this time he visited Toronto, Montreal, Ottawa etc.

During this stay and his interactions with the Indian community in New York, specially the Jaipurites, he met many of his old acquaintances and schoolmates including Shri Padamji Kala, Kailash Rawat etc. It was a surprise for Nagendra Bhai Sahib that we had very good flourishing Jaipur community in New York very well adapted with the culture and practicality of NYC society in which he came to know how to make calls in emergencies, keep away from shoddy places of NYC and very fast moving

Manhattan and subway system. He used to get up very early for breakfast and visit various tourist spots through the mass transit system of NYC. It was really surprising for all of us that he had high levels of energy and enthusiasm to see and know the mega city of NYC by himself with very quick and swift adaptability.

We made plans for his visit to USA for eleven days' trip, in which he covered Disney World of Florida, Dallas, Los Angeles, Chicago etc. He also visited neighbouring cities like Washington DC, New Jersey etc. With the help of my wife Rajkumari, he got a ticket of Europe for about 15 days. He enjoyed this tour also very well. After coming from Europe he enjoyed Christmas with us in New York with Tongya and Kala families. During his Newyork visit we went to the famous Medison Square Gardens in Manhattan, where some beauty pageant was going on and which was a very new experience for us.

Later on we came to know that he had made many friends there too as if these people were well known to him from a long time. His tour of more than two months' stay out of India; left many many good memories and inspirations for all of us.

Sunil Tholia



Challenges are what make
life interesting and overcoming
Them is what makes life meaningful.

If you light a Lamp for some other
it will also brighten your own path.

Be happy to change your goals,
But never change your values

Life gives you both positive and negative. Focus
on the good and move ahead with commitment

strength does not come from winning
your struggles develop your strength.

If you are a true warrior, Competition doesn't
scare It make you better.

“ जिनमें अकेले चलने का
हौसला होता है, उनके पीछे
एक दिन काफिला होता है ।”

“मेहनत इतनी खामोशी से करो
कि कामयाबी शोर मचा दे”

“सारी दुनिया कहती है हार
मान लो लेकिन दिल धीरे से
कहता है एक बार और कोशिश
कर तू जरूर कर सकता है।”

An Humble Personality

- Justice Dr. Vineet Kothari



Hon'ble Justice N.K. Jain is known to me for the last about 36 years.

In his childhood days, His Lordship was a very good Badminton player. He was enrolled as an advocate in the Court in 1968 and thereafter he stopped playing competitive Badminton, however he continued to play and I have seen him playing in the Finals of Badminton Matches in Income Tax Department inter range Sports Meets, Bar Vs. Bench and he always won. This winning spirit and spree has continued throughout his Lordship's life until now.

Before elevation to the Bench, Justice Jain was practising in Jaipur as a Lawyer and I have known him since then.

I have practiced before him between 1990 to 1996. He was bold, straight forward with good understanding and grasping.

I know him as a very fast and quick Judge and with a great passion to dispense justice to poor people, never moved by high flier Lawyers. His Lordship belongs to a very religious Digambar Jain family and even his father Justice Shri J. P. Jain was a great Judge, in Rajasthan High Court, who also earned a very good name in Rajasthan High Court.

I feel proud and happy in knowing this family so well. His Lordship's unassuming behaviour towards friends and younger brothers like me has been so cordial and full of warmth and even now, when we meet him outside the Court also, his affectionate hand shake and hug can win the heart of any person. The passing away of Mrs. Arunaji Jain was a set back to Justice Jain, which the sportsman spirit in him could overtake.

I am feeling pleasure in writing these few words for the Book, I appreciate the good action of Samachar Vichar Sansthan and its Associates for compiling the book for posterity and has chosen me as his younger brother to write a few words about him and I feel very happy and proud to have been so chosen. From the said Book, I am sure, many will draw inspiration.

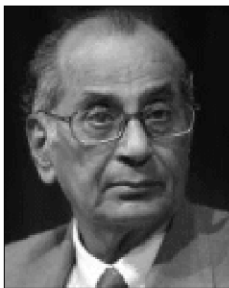
May God bless Justice Jain and all his family members with a very happy, healthy and prosperous life.

- Justice Dr. Vineet Kothari

Judge, Karnataka High Court
Now Judge and Executive Chairman Legal Aid Madras High Court

Energetic Full Of Verve, Budding With Energy.

-Justice S. Mohan



Many years ago I had the pleasure of meeting Justice N. K. Jain then the Chief Justice of Madras High Court, when he visited me. On the very first meeting, I found him to be energetic full of verve, budding with energy. No wonder, he attracted me a great deal. Later on I came to know that as Chief Justice he endeared himself in that exalted post. His legal acumen was praise worthy. A part from this, he was always kind to the juniors in the bar. He never allowed unnecessary arguments and was always up to point. The result was a Chief Justice he shone very well.

Thereafter, he was transferred to Karnataka High Court as Chief Justice. He carried with him the badge of efficiency and no wonder the bar in that state lauded him after cessation of Chief Justice ship he became the Chairperson of Human Rights Commission in Himachal Pradesh. He also held additional charge of Lokayuktha. Because of is eminence he was appointed as Chairperson of Rajasthan State Human Rights Commission for 5 years up to 15.07.2010.

Besides adorning these distinguished posts, he also was the president of Digamber Jain Athishaa Kshetra Sri Mahaveer Ji from 11 to Feb 2014.

While he was the Chairman of the Rajasthan State's Human Rights, he exhorted that HIV/AIDS affected persons are also entitled to the basic rights. It was an eye opener, that shows his deep commitment to value the Human Rights. It is a matter of approbation.

More than above all, being devout Jain, he took an abiding interest in the research of Jain philosophy that led to espousing the value of Ahimsa and Human Rights in Indian Cultures with special reference of Jainism. This booklet should be hailed as a brilliant product of Justice N. K. Jain. It was his extraordinary assiduity with helped to bring out the booklet "Human Rights and Jain Dharma". In addition a few booklets in memory of his father late Shri J.P. Jain was published by son Gaurav which deal with interesting legal topics or worthy of appreciation and manifest his reverence to his grandfather. I feel that his services should be well utilized in any post where hard work and diligence are called for.

In short, I should say Justice N.K. Jain always enjoyed esteem and respect as pillar of Justice, as preserver of the weak and poor against oppressors and tyrants, as upholders of the freedom and liberty of human being, as a sword for the guilty and a shield for the innocent.

Indeed he is a thorough Gentlemen.

- Justice S. Mohan

Former Judge, Supreme Court of India
President, Emeritus World Congress of Poets

Justice Jain known for Simplicity and Humanity

- Justice R.S. Chauhan



I am delighted to know that the Samachar Vichar Sansthan is bringing out glimpses of the life and times of Justice N. K. Jain, former Chief Justice of High Court of Madras and High Court of Karnataka.

My association with Justice Jain has been a long one, as he was my father's student in Maharaja College, Jaipur. My father tells me that "Narendra was a fantastic Badminton player, who represented the State both in Nationals and Interstate Badminton Championship for over a decade." The spirit of sportsmanship is an integral part of Justice Jain's personality. A great listener, ever accommodating of other's views, Justice Jain has taken life with the equanimity of a great sportsman. In all the years I have known him, I have never found him to be flustered or agitated. He has taken all the facets of life in his own stride.

I first met Justice Jain, as a lawyer, when I entered the Bar of Rajasthan High Court in mid-1980s. Although he was many years senior to us, both in age and in profession, he treated the young members of the Bar with love and affection. Ever encouraging, ever guiding, soon he became our friend, philosopher and guide. His practice in the Civil, Criminal and Corporate laws, ensured his daily appearances before the court. We, the young members of the Bar, would eagerly follow him in the court. His smiling face, his equanimity in the court, impressed all of us. His repeated victories in the election of the Bar Council of Rajasthan, over a decade, testifies to his immense popularity in the Bar. His contribution to the cause of the Bar members was acknowledged by his election to the Bar Council of India, where he represented the Bar Council of Rajasthan for many years. Of course, we were elated when he was elevated to the Bench in 1990.

As a Judge, Justice Jain was known for his patient hearing, his wit, and his ability to grasp the complex legal issues easily. Simple in his language, simple in his demeanor, he dispensed justice to the poor litigants expeditiously. While he could easily understand the pain and suffering of the common man, he could cut through the elegant arguments of big litigants, and go to the heart of the matter, like a knife through butter. His jovial nature, his robust common sense, his earthy personality endeared him to both the members of the Bar and the Bench.

In 1997, his transfer was a loss to Rajasthan High Court, but a gain to the High Court of Madras. While in Madras he distinguished himself, both as a Judge and as an academician. His stints as Chief Justice of High Court of Madras, and High Court of Karnataka have left an indelible memories in both the High Courts. When I joined High Court of Karnataka, in 2015, my colleagues spoke highly of his contributions as their Chief Justice. They continue to reminisce about him. Even after demitting the office of the Chief Justice, Justice Jain's concern for the people did not diminish. He continued to grapple with the problems of the people as the Chairman of the Human Rights Commission, Rajasthan from 2005 to 2010.

Justice Jain's contribution is not confined to the courtrooms. He has extensively published readily readable books on various topics of law. His books have ranged from the Rights of Women, and the Rights of SC and ST communities, to Intellectual Property Rights. His books, which are simple and elegant, demystify the complexities of law for the average reader. His works have inspired the Legal Service Authorities of different High Courts to publish such simple books for the litigants. Hence, Justice Jain has contributed immensely to the legal literacy movement in our country.

Justice Jain is also a highly religious person, although he does not wear his religion on his sleeves. The respect he has earned within his community is reflected by the fact that he was elected as the President of the Digambar Jain Atishay Kshetra Shri Mahaveer Ji. Influenced by the great Jain tradition, Justice Jain is an epitome of Jain philosophy: Ahimsa Parmo Dharama, and live and let live.

The life of Justice Jain should inspire the young. His journey has been arduous, and winding, but full of simplicity, and humility. Despite having adorned high public offices, his simple living and high thinking, his concern for the fellow being, his deep understanding of life continues to act as a light house for all of us in our dark hours.

I would like to congratulate the publishers for collecting the glimpses of Justice Nagendra Kumar Jain from different persons so as to present a holistic view of a man's life well lived.

-Justice R.S. Chauhan

Former Judge Rajasthan and Karnataka High Court
Now Chief Justice, Telangana High Court



कभी हार मत मातों, आज कठिन है कल और
भी बदतर होगा लेकिन परसों धूप खिलेगी।

Illustrious Son of A Worthy Father

- Justice Dr. A.R. Lakshmanan



Mr. Justice Nagendra Kumar Jain is a multi-faceted personality and an eminent judge, a forerunner of legal literacy and human rights awareness drive in Rajasthan.

It is a matter of great pride and honour that he has become a legend in his own life time. He is a man who believes in maintaining the dignity of the legal profession and the judiciary and follows the tradition handed down by the legal giants of the yester years.

I find words inadequate to express in full the role of Hon'ble Mr. Justice Nagendra Kumar Jain in relation to many of his positions in public life. He was the Chief Justice of Madras and Karnataka High Courts. In his capacity he has introduced several reforms. He is also known for his efforts to propagate the philosophy of Article 51 A of the Constitution of India.

As I said earlier he is a many splendeder personality. His kindness is proverbial. He is adored and admired by every one who comes to know about him. True to the culture of his family, he has been a philanthropist and has carved out his name in the hearts of many.

I can write many pages about his multi-faceted activities in various fields. I do not want to write many pages. In short this is my judgment about Mr. Justice Nagendra Kumar Jain, a sports person.

As a friend	He is Sincere
As an educationalist	He is exemplary
As a judge	He has no parallel
As a philanthropist	He is lavish

In conclusion, I say that he is a man of remarkable courtesy, helping nature. He has the sense of hospitality, which has endeared him to a large circle of friends and admirers like me.

I wish him all success in all his endeavours by the grace of the great architect of the universe. I wish him and the members of his family long life and successful future.

- Justice Dr. AR Lakshmanan

Former Judge Supreme Court of India
Former Chairman Law Commission of India

Two Incidents related with Chief Justice

- Prabha Sridevan



When Gaurav son of Justice N.K. Jain (Former Chief Justice, Madras High Court) asked me if I would write a small note on him, I was very touched. I would like to share two incidents, one happened when I was a lawyer, and the other after I had become a judge of the High Court.

When I was practising as a lawyer I on behalf of my law firm, made a complaint to Chief Justice N.K. Jain (as he then was) about a member of the subordinate judiciary. He immediately called the Registrar Vigilance and issued directions to seize the records and take action at once. It was very heartening that a complaint was acted upon so swiftly by the Chief Justice.. The officer was also placed under suspension.

After I became a Judge, Chief Justice N.K. Jain presided over a conference which was attended by managing directors of State Transport Corporations, Secretary to Govt and members of the Subordinate Judiciary. Many useful and farsighted suggestions were made on how to reduce accidents. The issue was considered from all perspectives. I remember we even discussed how the bus drivers must be taken care of. their shifts should be carefully fixed etc; if we wanted the lapses to come down. It was very gratifying to me that the Chief Justice did not think that accidents were mere statistics but it meant loss of lives and limbs. This was a very humanistic effort where the Court reached out to the common man's grievances.

-Justice Prabha Sridevan (Retd)
Madras High Court

Sister Judges with Aruna wife of Justice N.K. Jain



Justice Jain's Good Behaviour with Brother Judges

- Justice M. Karpagavinayagam



When I was the Judge of Madras High Court from 1996 onwards, I had the opportunity to move with Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain after he was transferred from Rajasthan High Court to Madras High Court.

He had the useful and famous tenure for about four years in Madras High Court from 1997 to 2001, as the Judge as well as the Chief Justice before he was transferred as Chief Justice of Karnataka.

At the outset, I shall appreciate the great quality of Justice Jain who moved with the brother Judges and Bar members with so much of affection and kindness.

When I was sharing the Bench with him, both of us had the opportunity to hear a number of cases and dispose of the same without any delay.

In this context, I must make a special mention about Mr. Justice N.K. Jain who used to hear the counsel for both parties patiently and politely and ultimately would dispose off those matters, by meeting every point after consultation with the brother Judge by rendering justice without giving any room for partiality.

When he was the Acting Chief Justice of Madras High Court, he used to treat the brother Judges with utmost respect and love. It was regular for him to invite the brother judges and their families to his home to have sumptuous dinners.

Whenever myself and my wife had opportunity of visiting Justice N.K. Jain, either at his residence or in function official / private, we noticed that both Justice Jain and his wife showed affectionate hospitality and sincere respect to us. I still remember that Justice Jain as a presiding Judge had disposed off the several complicated matters in quickest possible time without much delay.

Even after retirement, I am told that he has been spending all his time for the service of the society and also for the development of Jain Temples Darshan and Shree Mahaveerji.

I sincerely pray God Almighty to shower His blessing for his long life with peace and prosperity. There is a saying. "It is Great to be Great but Greater to be humane".

- Justice M. Karpagavinayagam (Rtd.)

Senior Advocate, Supreme Court of India
Former Chief Justice of Jharkhand High Court
Former Chairperson, Appellate Tribunal for Electricity,
Petroleum & Natural Gas, New Delhi.

The Golden Period - Karnataka Judiciary

- Justice V. Jagannathan



“An institution is nothing but the lengthening shadow of a great man” –

This article focuses on the contribution of Hon'ble Chief Justice Mr.N.K.Jain (as he then was) and the Chairman of Rajasthan State Human Rights Commission, to the Judiciary during his tenure as Chief Justice of Hon'ble High Court of Karnataka.

I had the privilege and good fortune of having deep association with his lordship Hon'ble Justice Sri N.K.Jain, not only as a sitting judge of the High Court of Karnataka but also as the Director of Karnataka Judicial Academy before my elevation as Judge of Hon'ble High Court of Karnataka in the year 2005.

During the period, when I was the Director of the Judicial Academy several innovative steps were taken by Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain to strengthen the District judiciary by holding several training programmes in the academy to equip the judicial officers of the state to discharge their functions in the most efficient manner and to ensure that speedy disposal of cases takes place all round the year and thereby delivering justice in the quickest possible time frame to the litigant public who knock at the doors of the courts for redressal of their grievances and seeking justice to them.

It is with the aforesaid aim in view the training programmes were so conceived by Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain and the method adopted by the Chief Justice was such that it enabled the judicial officers of the state to render qualitative justice to the really affected people. The quality of the work turned out by the judicial officers of the state during the tenure of Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain was of a very high order.

In order to achieve this goal, Hon'ble Chief Justice N.K. Jain evolved a novel method of providing the material beforehand to the judicial officers and thereafter the judicial officers were called for training. During the training period there used to be effective interaction between the trainee judicial officers and the eminent speakers mainly Hon'ble Judges of the Supreme Court and High Courts (sitting and former) and other eminent personalities from various fields of knowledge.

The advantage of circulating the subjects beforehand to the judicial officers enabled the judicial officers to take very active part during the training programme and many of their doubts were cleared during the course of the interaction with the eminent speakers. This method of training, which was the brain child of Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain proved to be very effective and the very fact that the number of disposals of the cases by the judicial officers was very high both quantity and quality wise, itself is an indication of the effective training given to the judicial officers during Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain's period.

Another important contribution of Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain is the spreading of legal literacy among the public of the entire state of Karnataka. Several legal literacy programmes, camps were held during the time when Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain was the patron-in-chief of Karnataka State Legal Service Authority, and the President Hon'ble Mr. Justice R.V.Raveendran (as his Lordship was then). This legal literacy programme was also a great success in as much as lakhs of cases were settled during Lok-Adalats and compensation running to lakhs of rupees was received by the claimants/dependants, affected on account of motor vehicle accidents.

Apart from the above achievements Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain was also instrumental in organising several state level, national level and international level seminars and conferences in the Judicial Academy when he was the Patron-in-Chief of the academy. I had the good fortune to be associated in conducting several such programmes under the guidance and inspiration of Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain and the President Hon'ble Mr.Justice P.Vishwanatha Shetty (presently the Lokayukta of the State of Karnataka). During their period, I also had the opportunity to present several articles/papers for the benefit of the Judicial officers

The programmes and seminars conducted reflect the wide range of subjects chosen under the leadership of Hon'ble Mr. Justice N.K.Jain. In association with the National Judicial Academy, a programme on "Gender and Law" was conducted in collaboration with British Council, High Court Karnataka, and Karnataka Judicial Academy. A one day workshop on "Norweigin Project" on the topic 'Eradication of Child Labour' was organised with the collaboration of Department of Labour and NORAD UNICEF.

In association with Environmental Law Institute Washington D.C. (U.S.A.) and Environment Support Group, Bangalore, the Judicial Academy conducted a programme on Enforcement of Environmental Law. Under the guidance of National Consumer Disputes Redressal Commission, New Delhi, a programme called "Orientation Training Programme for Presidents and Members of District Forums of Southern States" was organised by the Indian Institute of Public Administration, New Delhi and Judicial Officers from the southern states of Karnataka, TamilNadu, Andra Pradesh, Kerala and Pondicherry were the beneficiaries of the said programme.

I have only highlighted some of the many programmes which were held during Hon'ble Justice N.K. Jain's period in Karnataka as the Chief Justice of Hon'ble High Court of Karnataka.

One more feather in the cap of Hon'ble Justice N.K. Jain. The number of Judges elevated to the High court from the Distinct Judiciary and from the Bar reached the highest number of judges appointed to the High Court of Karnataka. This singular achievement of Hon'ble Justice N.K. Jain is unparalleled in the history of Karnataka Judiciary.

Thus the achievements and contributions of Hon'ble Justice N.K. Jain as the Chief Justice of Hon'ble High Court of Karnataka leave this impression. No doubt in my mind that the era of Hon'ble Justice N.K. Jain will go down in the history of Karnataka State Judiciary as the "Golden Period". He will always be remembered for bringing the Karnataka State Judiciary to a very high level and Karnataka State Judicial Academy also became one of the best Judicial Academies of the Country.

Hon'ble Justice N.K. Jain has left Karnataka State "with his footprints on the sands of time" the great saying of the great English Poet, H. N. Long.

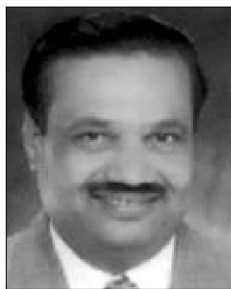
Justice V. Jagannathan
Former Judge
High Court of Karnataka



अच्छी किताबें और अच्छे लोग !
तुरन्त समझ में नहीं आते हैं उन्हें पढ़ना पड़ता है ।

A Colourful Personality

- Justice K.L. Manjunath



Hon'ble Mr. Justice Nagendra Kumar Jain who was the Chief Justice of Madras High Court was transferred to Karnataka High Court as Chief Justice in the year 2001. At that time, I was an Additional Judge of Karnataka High Court. In October 2001, I was made a permanent Judge. Oath of office was administered to me along with brother Justice N. Kumar, Justice D. V. Shylendra Kumar, Justice N. K.

Patil by Hon'ble Justice Mr. N.K. Jain.

My association with Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain was a memorable one. He was very simple, quick in grasping and maintained very cordial relationship with all Judges, Members of the Bar and the Staff of the Judiciary. He had maintained a very good relationship between the Bar and the Bench. As a Judge, he was quick in grasping and used to dictate the judgements in the open court without giving any room for any controversy. During his time, he brought many changes in the administration of Justice. He was very free with all the brother Judges. At 10.15 a.m. sharp, he used to come to the coffee hall where all member Judges used to meet over a cup of coffee and then disperse to the court sharply at 10.30 a.m. This was made as compulsory by the Chief Justice for two reasons. One was to exchange pleasantries and the second was to see that all Judges had attended to the court sharply at 10.30 a.m. He was preparing the roaster assigning the work to all Judges in a clever way to see that each Judge shall dispose more cases so that High Court shall not be overburdened with long pendency. He used to request his brother Judges to give priority to dispose off old matters.

Though I was the Junior most Judge, considering my capacity in settling matters to put an end to the further litigation, he appointed me as Chairman of Karnataka State High Court Legal Services Committee which shows how he was judging the performance of his brother Judges.

He was a very good sportsman. Even as the Chief Justice, he used to guide us to play badminton. When he was young he had represented the State of Rajasthan. He was a very good host. He used to invite all the Judges for lunch or dinner by creating occasions. Mrs. Aruna Jain was an ever smiling lady and she was also a very good hostess. He is a true

follower of Jainism. He respected other religions also equally. When I was the administrative Judge of Raichur district, I had invited him to attend a function at Raichur and taken him to Mantralaya to have the blessings of Lord Raghavendra Swamy. Along with him, Mrs. Aruna Jain also accompanied to Mantralaya. In the evening, he also pulled the silver Chariot of Raghavendra Swamiji around Brindavan which shows how he respects other religions also. Considering his services of having worked as Chief Justice of Madras and Karnataka High Court, we were expecting that he would be elevated to Hon'ble Supreme Court. Even though he was not elevated, it was not a disappointment for him. On the contrary, he dedicated himself to serve the people by involving with NGOs and other religious institutions at Jaipur. He published many books on legal services authority to spread the legal awareness among the people which he used to send me regularly. Though he retired long back from the service in Karnataka High Court, even today he maintains good relationship with his colleagues. Every year on the day of Kshama Parva Din, I receive a letter which shows the love and affection he has for the colleagues. Unfortunately, he lost his better half Mrs. Aruna Jain recently which is a shocking news for me. I had also sent a condolence message to Mr. Jain.

I am happy to know that Samachar Vichar Sansthan, Jaipur with association of others has decided to publish a catalogue on personality of Hon'ble Justice Mr. N.K. Jain which is really appreciable. Such a catalogue, would be a guide for the young members of the Bar, Judges to know the towering personality of Hon'ble Justice Mr. N.K. Jain so that youngsters can inculcate the good and human values of Hon'ble Justice Mr. N.K. Jain.

- Justice K.L. Manjunath

Former Judge, High Court of Karnataka and
Chairman Karnataka Border Protection Commission

With Brother Judges



A True Gentleman With Multifacet And Unique Personality

- Justice S.B. Majage



The life of Sri. Justice N.K.Jain is full of activities and achievements, being a sportsman of repute and a star performer.

He was chosen continuously as a member of Bar Council of Rajasthan for about 19 years from 1971-90 till elevation. He was also a member of the Executive and General Council of National Law School of India University, Bangalore.

When recognizing his acumen as a faculty member and academician, he was nominated as a member of the said Academic Council from 1993 to 1996 by the Chief Justice of India even after his appointment as a judge.

He served in Madras High Court for about 4 years till the end of August 2001.

Justice Jain was of the view that Judges and advocates belong to the same legal fraternity. According to him an advocate discharges his duties with the best of his ability and capability in the interest of his client without having partisan attitude, whereas a Judge has to apply Law on the point to the facts of each case and discharge his duty without any attachment, fear or favour or ill will. He believed that credit for a judgement does not go to judge alone but to Lawyers also as the assistance of an advocate is directly proportionate to the quality of a judgement.

He is also of the view that learning is a constant process, be it in games or any field of activity. So, keeping his mind open, he used to hear advocates with respect and patience for a just decision in the case.

True to the dictum that 'no person is dressed for the day unless he wears a smile on his face', he was always wearing a smiling face - a sterling quality. So, as a Judge, he always worked with cheerfulness, without any tension on his face nor did he create any tension to others in the court hall. At the same time, he was strict as, to him, discipline and values in life are important. Further, he being a God fearing man, was always impartial and careful in the discharge of his duties and did not sacrifice his principles nor did he go against his conscience to be a good judge because he was/is of the firm conviction that no Judge can please everybody and one has to be strict and take strong action in the administration of justice. He believed that justice would be effective, only if power of the courts and respect to them are guarded. He is also of the firm view that any attempt to denigrate the judiciary requires to be avoided and every effort must be made to wipe out

such tendency. So also, he is of the view that to maintain Rule of law, reputation of the judiciary requires to be maintained.

Because of his long standing experience at the Bar and active involvement in the various activities of the legal fraternity, he knew the problems and difficulties faced by litigant public besides the day-to-day problems faced by lawyers. So, as a Judge, he was very much concerned with the quick dispensation of justice in the courts. As such, on becoming Acting Chief Justice even for 3 short periods and thereafter as permanent Chief Justice, his first priority was to see that cases coming to courts are heard as early as possible to put an end to their litigation – a need of the hour.

Because of his sportsmanship and quality of leadership of taking every body with him as a leader of team, dedication, concentration besides remaining calm in all situations coupled with his unassuming character and treating alike his brother and sister judges besides Advocates without any discrimination, be a senior or junior, helped him.

So, with the co-operation of his brother and sister judges and assistance of lawyers, there was a record disposal of 2,41,885 cases from 13-9-2000 till August 2001 under his stewardship when he was Chief Justice of Madras (now Tamil Nadu) High Court, reducing the pendency considerably. Out of the said disposal, 31,353 cases were 7 years old and 1542 cases were 15 years old. Said disposal is in addition to disposal of about 80,000 cases in the same High Court that too, when he was only an acting Chief Justice for brief spells.

Also, on account of his taking interest in that direction, even subordinate courts of that State have disposed off 21,78,047 cases, including 36,000 cases which were seven years old and that was also a record.

It was his lordship, who got sanction for the constitution of 30 Fast Track Courts in the first phase in the cadre of Addl. District Judges to clear pending criminal cases, including cases of under trial prisoners. Further, even a number of long pending criminal cases also came to be disposed off by the Chief Judicial Magistrates in as much as there was execution of about 20,000 non - bailable warrants in the year 2000 and 4000 till August 2001 by police, which was on account of initiative taken by him only.

His lordship was of the view that not only should there be early disposal of cases, such disposal should be cheap also. So, he took interest in the functioning of Lok-Adalats. As a result, a number of Lok – Adalats were held settling 6380 cases, in which compensation worth Rs. 41,53,31,581/- was awarded. Further, His lordship was the pioneer in having Lok-Adalats at central jails covering even lady prisoners so that their cases are also decided early. He had also taken steps for having regular Lok-Adalats at Erode and Tanjavoor jails, besides the constitution of Prison Lok-Adalats at 4 central

prisons and women prison Lok-Adalats. When he was acting Chief Justice, then also he got Lok-Adalats held at Neyyali, where in long pending land acquisition cases were settled and compensation was paid.

Thus, on account of initiative and steps taken by him, there was a record disposal of cases under his leadership in Madras (now Tamil Nadu) High Court and also by the Sub-ordinate Judiciary.

He got 14 Acts translated in Tamil language with their publication and distributed substance and legal aspects. That was done to inculcate legal knowledge and spread legal awareness among local public.

His lordship is not only noble but also simple and sober. He has an amiable personality. Though he held highest posts in the State judiciary besides serving as chairperson of State Human Rights Commissions, he has no ego and does not believe in pomp and show.

He hails from a noble and respectable family. His lordship always remembers the advice of his late father justice J.P.Jain that “Do not expect anything from anybody. Do not be provoked by anyone. Let your heart be not troubled by anybody”. So, he never hurt the feelings of others either directly or indirectly. His lordship’s simplicity could be understood from the fact that he always remembers me on the eve of Deepawali festival and sends greetings. That apart, though I am younger to him in age, on the eve of every “Kshamavani Parv”, his lordship sends letters to Judges including me on the auspicious day of “Paryushan Parv” asking to pardon/forgive him and his family members for any actions, words, mistakes and deeds, that hurt me or my feelings in any way during the year. This speaks a lot about his noble personality.

His life is an open book and inspiring to all. He does not think ill of anybody even for a moment. He is a gentleman to the core with simplicity in life, serving as a role model.

His lordship is the rarest of human beings in the real sense with experience and achievements in all fields of life. In a nut shell, he is a unique multifaceted personality and as such, any number of words would fall short to write about him.

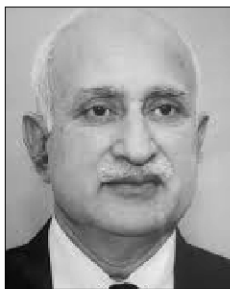
May Almighty bless his lordship, and other family members for a long life with good health and happiness.

- Justice S.B. Majage

Former Judge of High Court of Karnataka;
Vice-Chairman of Karnataka Administrative Tribunal
Upa-Lokayukta of Karnataka State

Justice Jain is a Saint in The Robe of a Judge

- Shyam Sundar Bissa IAS (Retd.)



It is a matter of great pleasure that the associates of Samachar Vichar Sansthan of Jaipur have decided rightly (though lately) to publish glimpses of the personality of Hon'ble Justice Nagendra Kumar Jain. I have privilege to mention that I know Justice N. K. Jain since the time he was a practising lawyer of Rajasthan High Court. I witnessed his oath ceremony joining as a Judge of Rajasthan High Court in the year 1990 at Jodhpur, where I was working as the Supdt. of Central Jail.

The first public function jointly attended by both of us was the Annual function of Shri Pustikar Public School of Jodhpur. His motivational speech to the studens is still ringing in my ears. When all the speakers were praising the distinction holder students and underlying the common words for the importance of study and knowledge, he stressed upon the importance of games & Sports in the over all development of one's personality. Lately I have come to know that he had been national player of Badminton. After completing a very successful and memorable tenure as Chief Justice of two southern states Tamilnadu and Karnatak, in the year 2004 he was appointed as Chairman, State Human Rights Commission, Himachal Pradesh. At that time I was working as Dy. Inspector General of Prisons Rajasthan, Jaipur. Once I received a pleasant call from him that he will be visiting Jaipur by next month. I casually asked about the condition of prisons in the state of Himachal Pradesh and requested him to visit Jaipur Central Jail if possible. Adding to my pleasure of his call he agreed to come. And this was the visit I could feel the simplicity and humility of a 'person' who is Justice N.K. Jain. I can't resist my self to quote the incident. The scheduled time of his visit to the Cental Prison was 10.30 AM. All arrangements were done, quarter guard and gate guard were arranged as per the VIP Protocol. I was aware of his punctuality but when it was 10.45 AM and there was no trace of his arrival, we were worried. Prison officers (Supdt. and Jailors) were frequently going & coming through the main gate and outer gate checking Salami Guard etc. Since the mobile phones were not in vogue in those days, I rang at his landline phone at residence and enquired about his location and came to know that he had already left for central jail five

minutes before 10.00 o'clock as he was to reach there before 10.30. I came out and enquired about any vehicle or staff from the court. The guard commander replied that no one had come. While I was talking to guard commander, a ringing voice of a 'person' standing with the visiting relatives of Prisoners (Mulakatis) surprised me "Bissa Ji mein yahan hun' (Bissaji I am here). I approached him and asked "How you are here, sir?". In a very gentle voice he explained 'when I reached at the gate "police wala" told me "Gari Udhar Khari Karo" (Park your Car there). Looking all these arrangements and you in uniform and tamjham I thought that some VVIP might be coming today. Feeling ashamed of the trouble he had to face I submitted very submissively 'no VVIP is coming sir'. All these arrangements are for you only, sir. you are the VVIP. Problem was that no one could imagine that the Former Chief Justice & working Chairman of State Commission for Human Rights would come in that way driving his own car and would obey the 'orders' of guard commander without expressing his identity. Looking to this exemplary simplicity and gentleness the quote appropriately befitting for him is "a saint in the robe of a Judge"

It was good luck to the state of Rajasthan that in the year 2005, he became the Chairman of Rajasthan State Human Rights Commission. With the grace of God, I was also selected in Indian Administrative Services and posted as Collector and District Magistrate in Bundi. He was probably the first chairman who published the booklets and leaflets in almost all the topics in connection with the human dignity and even all walks of life. I received hundreds of copies from RHRC on rights and duties of citizens, legal aid and the pamphlets on Article 51 A of Indian Constitution. The same were distributed in Jan Sunwai Programmes, Ratri Chaupals and in daily hearing through samsya samadhan chapri organized by me.

Now even in the ninth year of his retirement he is the person readily available for delivering lectures on Human Rights, Ethics and like subjects in the courses organized by HCM Rajasthan State Institute of Public Administration (OTS) and is highly appreciated. His life and work may be described in one of the shlokas of Bharthrahari Shatak

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवंतु लक्ष्मी समाविशतु गच्छन्तु वा यथेष्टम्
अग्रैव मरणमस्तु युगान्तरे वा न्यायत्यथ न विचलन्तु पदेन धीराः

- Shyam Sundar Bissa IAS (Retd.)
Project Consultant HCM, RIPA, Jaipur

समर्पित व निःस्वार्थ भाव के धनी

- तरुण कुमार जैन



“सिद्धान्त चक्रवर्ती श्वेतपिच्छिकाचार्य 108 श्री विद्यानन्द महामुनिराज ने जिन्हें आर्षमार्ग व जिनवाणी का प्रबल समर्थक, तीर्थों के प्रति पूर्ण समर्पित, कुशाग्रबुद्धि, न्यायशील, विद्वान, विनयवान एवं विवेकवान आदि अनेक अलकरणों से अलंकृत किया है”, वे हैं न्यायमूर्ति श्रीयुत नगेन्द्र कुमार जैन साहब।

श्रीयुत जैन साहब वर्ष 2011 में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष बने तो उनका एकमात्र ध्येय था, यात्रियों एवं क्षेत्र के ग्रामीणजन को ध्यान में रखते हुए अतिशय क्षेत्र का तीव्र गति से विकास करवाना। तत्समय अतिशय क्षेत्र के प्रचार-प्रसार की अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए मैंने यहाँ हुए विकास कार्यों को करीब से देखा और महसूस किया कि निःस्वार्थ भाव, निष्ठा, समर्पण और समाज सेवा की प्रबल इच्छा के बिना यह सब सम्भव नहीं था।

श्री एम.एल. धौकरिया साहब व मैंने न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जी जैन साहब के कार्यकाल के स्वर्णिम वर्ष (वर्ष 2011-2013) के दौरान यहाँ हुए विकास कार्यों का प्रगति विवरण जनवरी 2014 में आचार्य विद्यानन्द जी के आशीर्वाद से प्रकाशित किए जाने में सहयोग किया। उन उल्लेखनीय विकास कार्यों के कुछ अंश यहाँ साझा कर रहा हूँ-

सच्चे अर्थों में न्यायमूर्ति श्रीयुत एन. के. जैन साहब की कार्य संपादन शैली, कुशल नेतृत्व क्षमता, समाज सेवा की भावना ही उन्हें दूसरों से अलग करती है। जस्टिस जैन साहब की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं। उन्होंने श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र के विकास के लिए जो कुछ कहा, उससे भी ज्यादा कार्यों को साकार रूप प्रदान किया। समस्त जैन समाज इसका साक्षी है।

श्री महावीरजी आने वाले यात्रियों को विभिन्न धर्मशालाओं में ठहरने में सुविधा हो, इसके लिए श्री जैन साहब ने धर्मशालाओं में बुकिंग की व्यवस्था को ऑनलाइन करवाया। इसके लिए www.mahaveerji.org वेबसाइट शुरू की गई। इस व्यवस्था का शुभारम्भ राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत ने दिनांक 19 दिसम्बर, 2011 को किया।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र “श्री महावीरजी” राजस्थान का नहीं अपितु भारतवर्ष का प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है। इस दिशा में प्रबन्धकारिणी कमेटी ने श्रीयुत एन.के.जैन साहब की अध्यक्षता में कुछ अतिविशिष्ट कार्यों को मूर्तरूप प्रदान किया।

अतिशय क्षेत्र से सम्बद्ध अपभ्रंश साहित्य अकादमी के लिए जयपुर के मालवीय नगर, संस्थानिक क्षेत्र में राज्य सरकार से रियायती दरों पर सितम्बर, 2012 में भूखण्ड की स्वीकृति दिलवाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसके पश्चात भूखण्डों का कब्जा 23 अक्टूबर, 2012 को एवं रजिस्ट्री 04 जनवरी, 2013 को कराई गई। इस कार्य के लिए “सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य विद्यानन्द जी महाराज ने “श्री महावीरजी” अतिशय क्षेत्र के लिए स्वर्णिम इतिहास रचने की संज्ञा दी।”

आपके नेतृत्व में महावीरजी अतिशय क्षेत्र के इतिहास को जीवन्त बनाए रखने के लिए प्रबन्धकारिणी कमेटी के 1930 से अब तक के सभी 100 ट्रस्टियों की परिचय पुस्तिका का भी 27 दिसम्बर, 2012 को प्रकाशन करवाकर भव्य समारोह में न्यायमूर्ति नरेन्द्र कुमार जैन, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति, राजस्थान द्वारा विमोचन करवाया।

जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु जनवरी, 2012 में भगवान महावीर एवं मंदिर चित्रित 10 ग्राम चांदी के सिक्के जारी किये गए तथा जनवरी, 2012 में ही भारतीय डाक विभाग, भारत सरकार द्वारा श्री महावीरजी मंदिर पर पिक्चर मय स्टाम्प व चित्रात्मक मोहर का प्रसारण करवाया गया।

यात्रियों के सुविधार्थ एक नया सोलर वाटर सिस्टम, धर्मशालाओं में कमरों की ऑनलाइन बुकिंग, चपाती मैकिंग वार्मर मशीन, रेलवे स्टेशन से मंदिर तक आने-जाने हेतु अतिरिक्त निःशुल्क दो नई बसें, सोलर स्टीम कुकिंग सिस्टम, 2100 फीट की नई सीवर लाइन व यात्री निवास के 4 ब्लॉक में 40 हॉल, बी-ब्लॉक में 8 एवं सी-ब्लॉक में 12 डोरमेट्री का नवीनीकरण, बिजली की अनवरत सप्लाई हेतु 200 व 320 केवीए के दो डीजी सैट स्थापित करवाये गये। वहीं सुरक्षा हेतु इन्फ्रारेड सीसीटीवी कैमरे भी लगवाए गये। वृद्धजन व शारीरिक रूप से अक्षम यात्रियों की सुविधा के लिए लिफ्ट सुविधा 5 अक्टूबर, 2012 से शुरू की गई।

महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर हर वर्ष की तरह लोक परोपकार की भावना से विकलांगों को ट्राई-साइकिलें, जयपुर फुट एवं बैशाखी वितरण, विधवाओं को पेंशन व जरूरतमंदों को रोजगार हेतु सिलाई मशीनों का भी वितरण किया गया।

श्रीयुत जैन के नेतृत्व में जैन विद्या संस्थान, अपभ्रंश साहित्य अकादमी के प्रचारात्मक प्रकाशन में कई पत्र पत्रिकाओं व पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया। वेबसाइट <http://apa.jainapa.org> का शुभारम्भ किया गया।

जनस्वास्थ्य सेवा विस्तार के लिए श्री महावीरजी द्वारा संचालित ऐलोपैथिक चिकित्सालय में राज्य सरकार से चिकित्सक की प्रतिनियुक्ति करवाई। ग्रामीणों एवं गरीबों के लिए कई निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाए गये। खराब एक्स-रे व ई.सी.जी. मशीनें ठीक करवाने के साथ ही दो नई मशीनें, हैड प्रेस बेबी वार्मर मशीन व ऑटो एनलाइजर की खरीद की गई। त्रि-वार्षिक विवरणिका वर्ष 2011-13 वेबसाइट www.justicenagendrakjain.com पर देखी जा सकती है।

उक्त कार्यों से न केवल अतिशय क्षेत्र के विकास को गति मिली, बल्कि यात्रियों एवं ग्रामीणजन को ऐसी सुविधाएं मिलीं, जिनके लिए वे वर्षों से इंतजार कर रहे थे।

हम सभी जिनेन्द्र प्रभु से यही कामना करते हैं कि ऐसे बहुआयामी प्रतिभा के धनी श्रीयुत एन.के. जैन साहब दीर्घायु हों। उनका मार्गदर्शन एवं प्रेरणा समाज को यूं ही मिलती रहे।

- तरुण कुमार जैन

जनसम्पर्क अधिकारी, मुख्यमंत्री कार्यालय, जयपुर



घनघोर अंधेरा एक तरफ, छोटे से दीपक की रोशनी एकतरफ,
मुश्किलें कितनी भी हों, दीपक की तरह डटे रहो, सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।

सरल, शांत एवं सहनशील

- चन्द्रप्रभा नेगी



मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि समाचार विचार संस्थान व उनके साथी माननीय न्यायमूर्ति नगेन्द्रकुमार जी जैन की विशेषताओं को उजागर कर रहे हैं, जो अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है। उनके बारे में मुझे भी अपनी भावना व्यक्त करने का मौका दिया, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

माननीय न्यायमूर्ति नगेन्द्रकुमार जी जैन हिमाचल प्रदेश मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष पद पर अन्य मेम्बरान श्री बी.एस. चौहान, श्री आई.डी बाली व मेरे साथ माह नवम्बर, 2005 में सुशोभित हुए। मैं खुशनुमा हूँ कि मुझे भी उनके साथ काम करने का मौका मिला। लोकायुक्त पद का अतिरिक्त चार्ज भी उन्हें दिया गया।

आयोग के सचिव श्री विनोद गुप्ता, आईएएस सभी शिकायतों/दरखास्तों को कमबद्ध कंसीडर कर सदस्यों के सामने रोजाना की मीटिंग में पेश करते थे और सदस्यगण उनका अवलोकन कर प्रसंज्ञान लेकर सम्बन्धित अधिकारियों को उनके जवाब के लिए भेजते थे। जवाब आने पर यदि जरूरी होता तो उनको सुनकर आदेश करते या सम्बन्धित अधिकारियों को कार्यवाही करने के लिए भेजते थे। समय-समय पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों को बुलाकर संवेदना से कार्य करने की चर्चा की जाती और गुड गवर्नेन्स के लिए पीड़ितों के मानव अधिकारों का हनन रोकने की कार्यवाही करने के लिए हिदायत दी जाती थी।

करीब 08 माह के कार्यकाल में आयोग ने विभिन्न शिकायतों पर संज्ञान लेकर लोगों के मानव अधिकारों का हनन रोकने के लिए दिशा-निर्देश दिये और सरकार ने भी उनकी पालना की। मुझे खुशी है कि बहुत कम समय के कार्यकाल में कई शिकायतों का निराकरण हुआ और शिकायतकर्ताओं को न्याय मिला।

यहाँ मैं 2-3 केसों का जिक्र करना चाहती हूँ:-

1. एक प्राइमरी स्कूल की बिल्डिंग गिरने के कारण 04 बच्चों के मरने पर कोई कार्यवाही नहीं करने की शिकायत पर प्रसंज्ञान लेकर मरने वालों के परिजनों को 25,000/- रुपये की अंतरिम सहायता का ऑर्डर दिया, और कहा कि आयोग दूसरी इनक्वायरी की जरूरत नहीं समझता। यह भी हिदायत दी कि गई इनक्वायरी रिपोर्ट के आधार पर कानूनी कार्यवाही करें। इसके अलावा यह भी आदेश दिया कि शिमला में जो भी खस्ता हालत में बिल्डिंग हैं, उनके लिए जिलाधीश शिमला एक जिला कमेटी बनाकर आवश्यक कार्यवाही करें।

2. इसी तरह से अस्पताल में एक मरीज की असामयिक मृत्यु होने पर यह आदेश दिया कि इसकी 15 दिन में जाँच कर रिपोर्ट करें एवं रिपोर्ट सरकार को भेजें, जिससे तुरन्त कार्यवाही हो सके। इसके अलावा यह भी आदेश दिया कि सभी अस्पतालों के बारे में एक कमेटी गठित की जाए। जिसमें सम्बन्धित अस्पताल का अधीक्षक, एक वरिष्ठ चिकित्सक, सम्बन्धित चिकित्सक व एक सरकारी

अधिकारी ऐसे मामलों की 15 दिन में अपनी जॉच रिपोर्ट सरकार को दें, जिससे सरकार उस पर उचित कार्यवाही कर सके ।

3. पुलिस अधिकारियों से चर्चा के दौरान आई.जी. से कहा गया कि वे अपनी रिजर्व फोर्स में से 3-4 आदमियों के मार्फत शिमला के सभी 12-13 वार्ड में हर माह एक बार जाकर वहाँ के निवासियों, खास तौर पर बुजुर्गों के बिजली, पानी, टेलीफोन का बिल जमा कराएँ और उनकी अन्य समस्याओं का भी समाधान करें । इससे बुजुर्गों को सहायता/सुविधा मिलेगी एवं पुलिस उस इलाके से फ्रेन्डली हो जायेगी । यह बहुत खुशी की बात है कि उक्त दिशा-निर्देशों की पालना कर सरकार ने इन तीनों समस्याओं को दूर करने के लिए अलग-अलग आदेश पारित कर दिये ।

माननीय न्यायमूर्ति नगेन्द्रकुमार जी जैन बहुत ही सरल, शांत स्वभाव के एवं सहनशील हैं । सदस्यगण व स्टॉफ से बड़ी आत्मीयता रखते थे । हिमाचल आयोग से राजस्थान मानवाधिकार आयोग में जाने के बाद संविधान 51 ए में वर्णित कर्तव्यों के बारे में व कुछ मानव अधिकारों की लघु पुस्तिकाएं उनके निर्देशानुसार डी.एफ.ओ. श्री नेगी व तत्कालीन सचिव श्री देश दीपक ने विद्यार्थियों व आम जनता की जागरूकता के लिए स्कूल, कॉलेजों, संस्थाओं व एनजीओ की मार्फत वितरण कर खूब प्रचार-प्रसार किया । विकीपीडिया पर भी जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन के जीवनवृत्त का उल्लेख उपलब्ध है ।

जस्टिस जैन व अरूणा भाभीजी के साथ कई मंदिरों विलासपुर, ज्वाला माता, नैनादेवी, कांगड़ा माता आदि जगह जाने का मौका मिला व मेरे आर्चड के फार्म हाऊस पर भी पधारें । उनसे जो प्रेम व आत्मीयता मुझे मिली, वह हम और हमारा परिवार ताजिन्दगी याद रखेंगे ।

चन्द्रप्रभा नेगी
पूर्व सदस्य मानवाधिकार आयोग
हिमाचल प्रदेश (शिमला)

आयोग के सदस्य, अधिकारी एवं स्टाफ के साथ



सुयोग्य पिता के सुयोग्य पुत्र

- विजय लक्ष्मी सपरा



व्यक्ति चाहे दुनिया के कितने ही सर्वोच्च पद पर आसीन हो किन्तु समाज में वो अपने सद्कर्म से ही जाना जाता है। इसी संदर्भ में न्यायाधिपति श्री नगेन्द्र कुमार जैन के पद नहीं वरन उनके व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं से मैं परिचित हूँ और जब जाना कि उनके जीवन पर एक पुस्तिका लिखी जा रही है तो निज लेखनी आतुर हो गई।

श्री नगेन्द्र जैन की जन्म स्थली अलवर है और मैं भी वहीं से हूँ। मेरी जन्मस्थली मुंशीबाग के निकट ही श्री नगेन्द्रजी का ननिहाल है। पास ही बीच के मोहल्ले में श्री नगेन्द्र जी का जन्म हुआ था। बाद में वो होप सर्कस बुर्ज में रहने लगे उनके पिता एडवोकेट जेपी जैन के मेरे पिता एडवोकेट श्री उमादत्तजी से पारिवारिक संबंध थे। इसी नाते हम सभी बहिन-भाई श्री जेपी जैन को चाचाजी एवं उनकी पत्नी श्रीमती पुष्पा देवी को चाचीजी कहकर बुलाते थे।

यह परिवार काफी समय तक अलवर में रहा। होप सर्कस में श्री जेपी जैन का ऑफिस था एवं निवास भी। बाद में इनके आवास के निकट ही अलवर की चर्चित गणिका का निवास था। बालक नगेन्द्र को स्नेह से वह गणिका कभी-कभी घर भी बुला लेती थी। परन्तु चाचाजी ने कभी एतराज न कर अपनी उदारता का उदाहरण पेश किया। कुछ समय बाद यह परिवार जयपुर प्रस्थान कर गया और हमारे पारिवारिक संबंधों में शिथिलता आ गई। मेरी बड़ी बहिन शारदा और उनके पति जो बीडीओ थे, उन्होंने पुत्र की पढ़ाई के लिए जयपुर में आवास लिया और श्री जेपी जैन के परिवार से फिर निकटता बन गई। मैं महारानी कॉलेज में पढ़ रही थी। हॉस्टल में थी, जीजी के यहां जाना होता था। अतः मेरा परिचय भी इस परिवार से हो गया।

श्री नगेन्द्र बैडमिंटन के अच्छे खिलाड़ी रहे, किन्तु जब देश से बाहर प्रदर्शन के लिए चयन हुआ तो इनसे कम योग्य व्यक्ति का चयन किया गया। जेपी जैन साहब अच्छी पॉजिशन में थे, यदि चाहते तो वे अपने पुत्र के पक्ष में फैसला करवा सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। ना ही नगेन्द्र जी ने इसे चर्चा का विषय बनाया। पिता के प्रभावशाली अस्त्र का प्रयोग किए बिना परिस्थिति के फैसले को स्वीकार किया। एक कुशल खिलाड़ी की क्या मनादशा रही होगी ? पर न पुत्र और न पिता ने निर्णय बदलने की चेष्टा की। यह साधारण बात नहीं थी। यहीं से प्रबल एवं निर्मल संस्कारों की नींव उजागर होती गई।

अपने पिता के प्रति स्नेह, आदर व समर्पित भाव से उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उनको स्मरण कर पुस्तिका निकालना योग्य पिता का सुयोग्य पुत्र होना प्रदर्शित करता है। इसके अलावा इनके द्वारा संचालित जे.पी.जैन मेमोरियल ट्रस्ट को जिसे इनकम टैक्स एक्ट में 80 जी धारा के तहत छूट मिली हुई थी, जमीन आवंटन होने पर, समाज को पहले देने की पहल करना अपने आप में एक कठोर निर्णय रहा होगा। उसी तरह आपने बैंगलोर में माननीय जजों के मकान लेने के अधिकार का इस्तेमाल न कर जैन धर्म के अपरिग्रह के सिद्धान्त का आदर्श उदाहरण पेश किया।

चाचाजी न्यायमूर्ति जे.पी.जैन साहब का आकस्मिक निधन 17 सितम्बर, 1975 में हो गया। तत्पश्चात उन्होंने सरकारी मकान 14 दिन बाद तुरन्त खाली कर दिया। आज के समय में देखते हैं कि किस प्रकार राजनेता सरकारी मकान को खाली नहीं करते।

एक दृष्टांत और है, जो श्रीमती अरूणा जी की स्मृति पुस्तिका से जाना। वर्ष 1984 में श्री नगेन्द्र जी बिना पत्नी को सूचित किए अमेरिका चले गए और 62 दिन बाद लौटे। यह कृत्य ठीक नहीं था। पुस्तक में इसे बिना अंकित किए भी काम चल सकता था, लेकिन श्री नगेन्द्र जी ने अपनी गलती को पूरी ईमानदारी से स्वीकार कर चारित्रिक विशेषता को दर्शाया। यह भी एक आदर्श उदाहरण है। मेरे ख्याल से जैन धर्म के आलोचना पाठ में वर्णित शब्दों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर धार्मिक व मानवीय मूल्यों को साक्षात्कार किया।

अंत में महिला होने के नाते एक बात, जिसने मुझे अंदर से छुआ, वह है श्री नगेन्द्र जी का अपनी पत्नी अरूणा जी की स्मृति में पुस्तिका का प्रकाशन करवाना। कितने ही पति अपनी पत्नी से प्रेम करने का दम दिखाते हैं, लेकिन मरणोपरान्त उनकी स्मृतियों को अंकित करना, एक-एक चित्र को सहेज कर रखना कोई बिरला व्यक्ति ही करता है।

दूसरों का भला सोचने व करने के कारण दिलों में प्रेम होना जरूरी है जो श्री नगेन्द्र जी में साफ तौर से देखा गया है स्वयं का निरीक्षण करने की आदत के कारण उनकी अलग पहचान बनी।

मानवीय मूल्य, कर्तव्य एवं अधिकारों में वर्णित एक्ट का लेखन व मानव अधिकार आयोग द्वारा दिये गये दिशा निर्देश का संकलन किया, जो बहुत महत्त्वपूर्ण रहा।

जीवन तो चलता है और चलता रहेगा। श्री नगेन्द्र जी जैसे आदर्श उदाहरण समाज को हमेशा नई दिशा देते रहेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

-विजय लक्ष्मी सपर

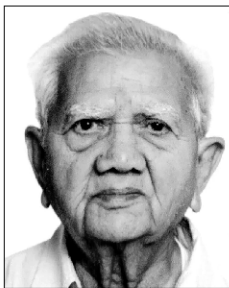
पूर्व निदेशक, आदिनाथ जैन शिक्षण संस्थान, अलवर

Function at Alwar (12-4-2008)



गरीबों की सेवा की लगन

-सुधीन्द्र गोमावत



मैं, जब मानवाधिकार आयोग राजस्थान के अध्यक्ष से मिलने गया तो सामने श्री नगेन्द्र कुमार जैन मिले। ये वे नगेन्द्र कुमार थे जो कि न्यू कॉलोनी में मेरे पड़ोस में रहते थे। तब ये छोटे थे। मैं शान्ति भाई दुर्लभजी के मकान "रोज हाऊस" में श्री शंभूसिंह जी देवड़ा के पास पेईंग गेस्ट की तरह रह रहा था। तब ये नगेन्द्र और देवड़ा साहब का बलवन्त शाम को न्यू कॉलोनी में साथियों के साथ खेलने के अलावा खुली सड़कों पर साईकिल चलाया करते थे। मुझे उनकी वो ही छवि आज भी याद है। इनके पिताजी श्री जे. पी. जैन साहब हाईकोर्ट के बड़े वकील थे।

फिर मैं "रोज हाऊस" से खेतान भवन में रहने चला गया था। यदा-कदा देवड़ा साहब और उनके परिवार से मिलने आया करता था। चूंकि नगेन्द्र जी उम्र में छोटे थे और मैं भी पढ़ाई और नौकरी में व्यस्त रहता था। अतः फिर मिलना बहुत कम हो गया था। परन्तु श्री जे. पी. जैन साहब जो अब राजस्थान हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश थे, उनसे जोधपुर में मिलना होता रहता था। जब वे बीमार थे तब उनसे मिलने उनके घर पर जाना हुआ, पर उन दिनों भी नगेन्द्र जी से मुलाकात नहीं हुई। वे कब वकील बने, कब जज बने, कब मुख्य न्यायाधीन बने, मैं पूर्णतया अनभिज्ञ रहा। पर एक बार वे मिले तो पुरानी स्मृतियां ताजा हो गईं। वे दिन याद आ गये जब न्यू कॉलोनी में निवासियों से आपसी मेलजोल था। सभी एक दूसरे को जानते थे। 4 न्यू कॉलोनी, रोज हाऊस में 5-6 परिवार रहते थे। कॉलोनी शान्त थी।

हमारा ओलेम्बिक का दफ्तर भी यहीं था। जहां मैं कार्य करता था। मेरी छबड़ा परिवार से घनिष्ठता थी। स्वर्गीय पदमचन्द्र छबड़ा मेरे अभिन्न मित्र थे। मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष की हैसियत से उनके डायरेक्शन पर बीकानेर, एसएमएस व अजमेर, भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल में कैंसर रोगियों के लिए मशीनों के रखरखाव के साथ-साथ सोर्स का इंतजाम हुआ एवं कैंसर रोगियों की सुविधाओं में सुधार के लिये प्रयास किये। हमारी संस्था, जयपुर कैंसर रिलीफ सोसायटी को अपना भरपूर सहयोग देती रही और जस्टिस जैन संस्था के आजीवन सदस्य भी बन गये। जब भी मैंने निवेदन किया वे सहर्ष हमारे कार्यक्रमों में भाग लेते रहे। इतने उच्च पदस्थ अधिकारी (जो दो-दो उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश रहे हों) द्वारा गरीब रोगियों की सेवा में इतनी लगन और तत्परता दिखलाना, ऐसा विरले लोग ही कर पाते हैं।

वे एक सहृदय व्यक्ति हैं और उन्होंने मानव अधिकार आयोग का अध्यक्ष रहते हुए सक्रियता पूर्वक कर्तव्य निर्वहन किया। अब भी वे गीता बजाज बालिका महाविद्यालय के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

मेरी कामना है कि वे दीर्घायु हों और इसी प्रकार मानवता की सेवा करते रहें।

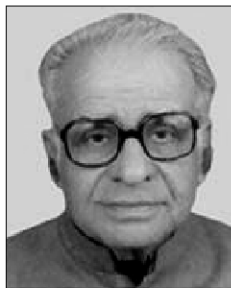
बचपन के सुखद समय की याद आज भी ताजा है।

- सुधीन्द्र गोमावत

सेवानिवृत्त आई.ए.एस.

Commands Great Respect in His Community.

- T.N. Chaturvedi



I have known Mr. Justice N.K. Jain for quite some time. I had heard of him and about his respected father while I was in Rajasthan. But I did not have any opportunity to personally know him at that time. I met him first in Bangalore (now Bengaluru) for the first time in August, 2007. His seemed to be a familiar face. At that time he was the Hon'ble Chief Justice of Karnataka. He administered the oath of office to me as Governor of the state of Karnataka.

Justice Jain has an amiable personality. In Karnataka he enjoyed the reputation as a Judge of cool temper, wide understanding, judicial depth and impartiality. He was quite popular amidst the judicial fraternity. But he never allowed anybody to take any undue advantage. He and his late lamented spouse also were hospitable. Justice Jain handled some difficult cases tactfully but within the framework of law. I found that he had many social concerns and interests. In spite of the pressure of official work, Justice Jain would make himself available for educational institutions, convocations and spreading of legal awareness. He has always taken interest in trying to build and spread the message of good citizenship.

After he relinquished his office in Karnataka, he served as Chairman of Rajasthan State Human Rights Commission. It was a long and distinguished tenure. He wrote many brochures and monographs regarding human rights for common man. It is necessary that the common man should know about his constitutional rights in a democracy. He has been very active in this regard all along. He continues even now to spread awareness about human rights and social causes.

Justice Jain has a spiritual personality. He has deep understanding of his faith, and follows it punctiliously. There is no sectarian streak in him. He commands great respect in his community. He believes in and tries to promote inter-faith harmony and goodwill. Even at his age, he is very agile, active and full of enthusiasm for social work. I wish Justice N.K. Jain a long and healthy life of fulfilment.

- T.N. Chaturvedi

Former Governor of Karnataka

Former Member of Parliament (R.S.)

Former Comptroller & Auditor General of India

A Tribute to An Adorable Personality

- Justice Jasraj Chopra



Born on 20th October 1942 at Alwar as the eldest son of Late Justice Hon'ble Shri J.P.Jain, Hon'ble Justice Nagendra Kumar Jain is a versatile personality endowed with manifold and varied successes in his life. He is a respected legal luminary, a reputed sportsman, a great protagonist of protection of the human rights of the citizenry of the country, a widely respected social leader and social reformer and at the same time he takes keen interest in education upliftment of the society and is actively associated with a number of educational institutions as its Chairman or Executive Director.

He is noble and courteous by temperament, soft spoken and fathoms love and affection for all, especially his senior and junior colleagues alike. He is very earnest and forthright in his character and does not mince words if he feels that something is wrong somewhere.

He and his late wife, Respected Aruna ji, both were very hospitable and arranged elegant parties at their residence to their brother judges and their spouses, where they were served with lavish and sumptuous vegetarian homemade dishes with great pleasure and honour, so much so that Respected Bhabhiji was affectionately called as 'Annapurana' by brother judges and their wives.

As a lawyer he was member of Bar Council of Rajasthan for 19 years. He was also member of the Executive Council of the Supreme Court of India, as also member Bar Council of India as well as member of Bar Council of India Trust. He was also member of the Executive Council and the Academic Council of National Law School, Bangalore. All these are illustrious and adorable achievements at his credit as a lawyer.

Keeping in view his brilliant and excellent record at the bar, he was elevated as a judge of Rajasthan High Court on 20th July 1990 and sat with me in Division Bench for about two and a half years. He has been a great asset to me as my colleague who is endowed with sharp intellect and mature understanding. He remained Chief Justice of Madras and

Karnataka High Court for about five years and his disposal of record has always been superb. He has also chaired the Human Rights Commission of Himachal Pradesh and Rajasthan for about six years.

As a social leader, he worked as President of Digambar Jain Atishaya Kshetra Shri Mahaveer Ji. He is presently the President of Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan.

He is widely respected as the head of big family left by his father. He has fostered great bonds of affection and love with families of his brothers and sisters. He is great as a father and adorable as a loving and caring husband.

He is also a good writer and has published about 32 small books which include the memoirs of his late father, Hon'ble Justice J.P.Jain, as also his wife, Smt. Aruna Jain.

He is a man of strong convictions. If something enters his head which he feels is good for the society in general or to the profession to which he belongs, then he leaves no stone unturned to take that project or scheme to its logical and successful end.

All said, Mr. Justice N.K. Jain's life has been most eventful, highly successful, illustrious as well as a source of inspiration for the society in general and legal fraternity in particular. I wish him long life, good health and great prosperity in life.

Justice Jasraj Chopra
Former Judge Rajasthan High Court



From the Hon'ble Editor Desk
Dr. S. Nagarajan

----- Mrs. Aruna Jain and Mr. Chief Justice wrote on 6.9.2000 to his friends on the SHAMAVANI DAY celebrated by the Jains at "PARYUSHAN PARVA" when we recall that we have our popular Judge Dr. A. R. Lakshmanan as the Chief Justice of Rajasthan High court now we are grateful to providence that we have had an exchange of the two nice Chief Justice in their respective positions.

Concern with the Cause of Human Rights Society and the Students Visiting Him

- Prof. B.L. Sharma



I feel privileged to have a long association with Honorable Justice Shri N. K. Jain. I witnessed his working in different capacities without any change in his behaviour. He possesses humanitarian face and approach in his dealing with all irrespective of their status. He lived his life strictly with professional approach. However, he never allowed anger and inhuman approach in discharging the obligations attached to his offices in different capacities.

I saw him as a teacher teaching the Indian Penal Code at Faculty of Law in the then University of Jodhpur, Jodhpur. I feel no hesitation to state that apart from an advocate, he is an excellent academician having excellent capacity to express and explain all the issues of law with relevant case laws in a very simple manner. He had clarity of thoughts and capacity to communicate effectively. Therefore, his thoughts and contents of teaching travelled to the minds of the students in the most effective manner.

I had an opportunity to see Justice N.K. Jain as an Advocate both at Jodhpur and at Jaipur. He used to focus on the practice of law rather than the practice of the facts, which upshots in to his great career in the field of law. As per his special characteristic, he used to be very simple and kind in his dealing with all specially the clients and the students.

He served the Bar Association and the Bar Council of India in different capacities and rendered his services to the fellow advocates and the institutions with great concern and responsibility.

The services rendered by Justice N.K. Jain as Judge and Chief Justice of different High Courts will be remembered by all, especially in speedy disposal of cases and leading path to establish the High Court Bench in the State of Karnataka.

I have seen his services as the Chairperson of Rajasthan State Human Rights Commission. Two things I would like to mention which I

have observed during my meetings with him in this capacity. Firstly, he –used to feel concern with the cause of human rights, society and the students visiting him in the Commission. Secondly, he was the first whom I met, who did not support for the casual concept of human rights prevailing in the society and made it clear that the right obligator in the human rights must be the State. He used to focus the jurisprudential concept of human rights rather than the self evidently concept of the same.

At this juncture, I would like to mention one experience that once I telephoned him to meet in person when he was leaving for Airport in Jodhpur. He waited at his residence until I reached there and thereafter, I boarded back in his car for the Airport.

He possesses' good health since he is a very good sportsman, lives peaceful, disciplined, punctual and tension free life. Many distinctions have been conferred on him in the field of sports since his career as a student. I remember that after living in Court for the whole day and serving faculty in the evening as a teacher at Jodhpur, he used to spare time for Squash / Badminton without failure.

However, I pray to God for an excellent health for him.

Prof. B. L. Sharma

Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University, Sikar (Rajasthan)
Former Vice-Chancellor, The University of Rajasthan, Jaipur, Bhavnagar
University, Bhavnagar, Sarguja University, Ambikapur

Inauguration of National Seminar



An Eminent Chief Justice and Excellent Administrator

- V. Vijayan



The Honourable Mr. N.K. Jain, Chief Justice (Retired) of Madras and Karnataka High Courts, is well known to me for over 20 years, ever since His Lordship was transferred to Madras High Court in 1997, as one of the senior Puisne judges, as I was Assistant Registrar (Judge's Section) then.

After serving as Acting Chief Justice for a brief period, he was posted as Regular Chief Justice in May 2000 until his transfer to Karnataka in 2002.

I was promoted as Deputy Registrar (Protocol) in 1999 and I had the great opportunity to get acquainted and work under His Lordship. I liked him for his immense legal knowledge, honesty, integrity, simplicity, shrewdness and uprightness in all matters.

His Lordship had saved a lot of money for the State Exchequer by minimising the requirements of the Judiciary when the subject was discussed. Dinner meets were held only in the High Court campus, avoiding extravagant expenditure at star hotels. When funds were allotted for a conference or such other thing, some amounts were in fact refunded to the state by limiting the expenses. His Lordship had an easy and forgiving attitude if some minor offence was committed by the staff members, but at the same time he dealt with them firmly and with an iron hand, when serious offences were committed. One such example was that of His Lordship's own personal staff in the cadre of Deputy Registrar being dismissed from service, for having misbehaved with a lady member.

Regarding the District Judiciary, His Lordship relied upon experience, ability and knowledge in dealing with the subjects brought for his consideration. He would listen to the divergent views and general opinion of all, before coming to the right conclusion. All the Honourable Judges and Subordinate Judiciary were at ease during his tenure and appointments were given without any huff or prior notice, and matters were discussed then and there and minutes drafted for approval.

His Lordship had no compromise on Judicial Principles and all judicial norms were strictly adhered to, which made the Honourable

Judges, Subordinate Judiciary, litigant public and the accused very happy. During his tenure as Head of the COFEPOSA Board, Legal Services Committee, Legal Aid Board and various other posts, he left no stone unturned and all matters requiring due consideration were discussed, even burning the midnight oil at times, and diligent orders were passed swiftly, keeping in mind the harm that may be caused by the inordinate delay in the matter. He had good rapport with the brother Judges all along and even now he is in touch with some of them. Legal literacy was spread through advertisements in the papers, wall posters, hand bills, etc. and the general public was greatly satisfied.

Regarding recommendation of names to the High Court for Judgeship, there was consensus among the committee members and the names thus sent were also cleared by the State quickly. In fact, all vacancies in the High court and subordinate courts were filled up without any delay. Additional posts sought for and sanctioned by the government were also filled up, following the prescribed norms and hence there was no room for displeasure among the less fortunate. Necessary infrastructure was sought for and obtained within a short period from the concerned authorities.

As to the promotions, transfer and postings of the Judicial Officers and Officers of the High Court, strict seniority, merit and ability were taken cognisance of, apart from the patient hearing, and to a large extent all were kept happy, which resulted in heavy disposal and clearance of backlog of cases. In fact, the promotion list was prepared and kept ready even as on the dates the vacancies arose and they were filled up immediately which was a great boon to all concerned.

His Lordship had sit in all branches of Law during his service in the High Court. His quick grasp at the subject, his great legal acumen and the immediate reference to many citations which were at his fingertips added feathers to his cap. The junior advocates were given an equal and patient hearing like their senior counterparts. Advocates were eager to put forward their cases and adjournments were at the bare minimum, leading to heavy disposal and our state becoming No. 1 in the disposal of cases. I am refraining myself from stating the elaborate statistics in this regard. Computer literacy was in the initial stage and our personnel were trained well to equip themselves and necessary equipment began to pour in.

His Lordship's family members were all very simple, unassuming, generous, affectionate and very considerate which is a rare phenomenon in the higher echelons of society. They never had the clout of being from a well-to-do influential family. Mrs. Aruna Jain, an embodiment of high virtue, is a shining example of how a lady should be and she was a GEM whom we lost about a year ago. Mr. Gaurav, His Lordship's only son is an upcoming and hardworking advocate, having knowledge in all segments of law, which is like his illustrious father and grandfather. Ms. Garima, his only daughter, is following her mother and guiding her family in a good manner.

During the service in Madras, His Lordship and family, pious as they are, visited great temples like Tirumala, Sri Kalahasti, Guruvayur, Sabarimala, Palani, Madurai Meenakshi Amman etc. They would not expect elaborate protocol arrangements during their journeys and put up with inconvenience many times.

It was a great experience for me to move with this noble soul whom I shall never forget and which I shall ever cherish.

I thank for the opportunity given to me for providing this article.

V. Vijayan

Registrar Administration (Retired)
and now, Additional Master, Madras High Court, Chennai.



Justice C. Nagappan and Other Judges of Madras High Court